आर.एन.आई. नं. 37109/81 कोड संख्या DELHIN/11312 पृष्ठ 12 मूल्य: 2 ₹

डी. एल. (ई) 01/5155/2021-23
यू. (ई).11/2021-23 Posted at DRMS Delhi-6

www.rashtratimes.com • rashtratimes • email: rashtratimesnewspaper@gmail. com

बैसाखी पर मोदी सरकार

दिल्ली से प्रकाशित स्वतंत्र विचारों का सबसे बड़ा साप्ताहिक

राष्ट्र टाइम्स

संपादक: विजय शंकर चतुर्वेदी

वर्ष: 44 ● अंक: 34 ● नई दिल्ली ● 25 से 31 अगस्त 2024

|| विजयशंकर चतुर्वेदी ||

हाल ही में केंद्र सरकार ने बिना आरक्षण वाले मंत्रालय में यूपीएससी की लेटरल एंट्री नोटिफिकेशन को वापस लिया है। प्रधानमंत्री मोदी के कहने पर बोर्ड ने नोटिफिकेशन को वापस लिया है। लेकिन राहुल गांधी हो या अखिलेश यादव या फिर तेजस्वी यादव, इसकी वापसी पर अपनी पीठ थपथपा रहे है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने ट्वीट कर, एनडीए की गठबंधन वाली सरकार और बीजेपी की बहुमत वाली सरकार में अंतर बताया है। हालांकि ये पहली बार नहीं है, जब मोदी की सरकार ने पब्लिक की सेंटीमेंट को देखकर बिल वापस लिया है।

लोकसभा चुनाव 2014 में ऐसा माना जाने लगा था कि 'मोदी की लहर' चल रही है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी ऐसा कह सकते हैं कि 'मोदी मैजिक' चला और बीजेपी ने

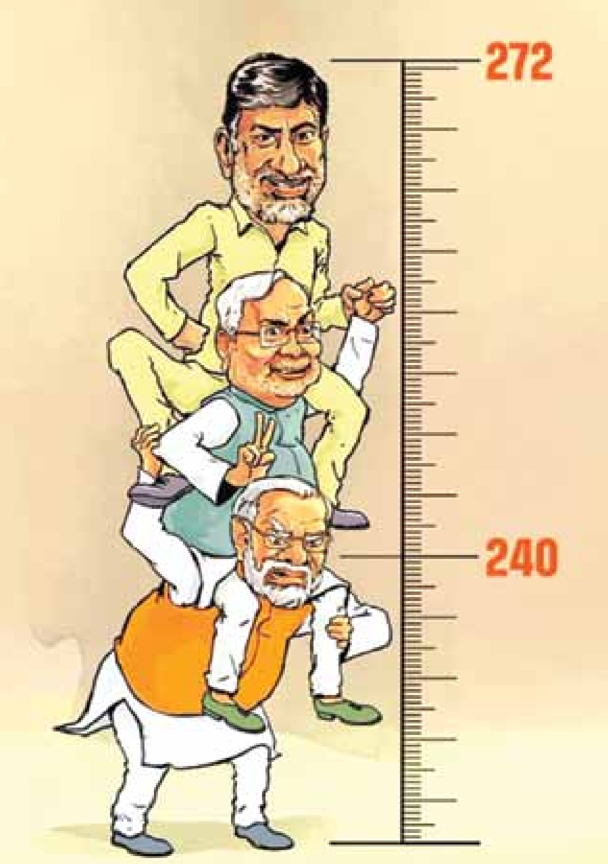

2014 के अपने ही रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया और 303 सीटों पर बाजी मार ली, वहीं, एनडीए को 353 सीटें जीतीं। अब बात आती है 2024 के 18वीं लोकसभा चुनाव की। पीएम मोदी, जो कि बीजेपी के प्रमुख चेहरा थे। 18वीं लोकसभा 2024 के चुनाव के नतीजे बीजेपी के मुताबिक नहीं रहे। बीजेपी को 240 सीटें मिलीं। वहीं, एनडीए को 292 तक पहुंची। 10 साल में पहली बार हुआ था, जब बीजेपी बहुमत के जादुई आंकड़े को छू नहीं सके। लेकिन, तीसरी बार पीएम मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी। पिछले 10 साल में पीएम मोदी की आगुवाई सरकार ने कई फैसले लिए थे, जिसका विपक्ष ने विरोध किया था। लेकिन, आम जनता वाली बिल सरकार अपने बहुमत के दम पर पास कराने में सफल रही।

अब जब 2024 में मोदी को बहुमत के आंकड़े के लिए

शेष पृष्ठ 2 पर

अबकी बार हेंमत बनाम चंपई

इस बार झारखंड विधानसभा के चुनाव हेमंत बनाम चंपई होने जा रहे हैं। चूंकि राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने जेजेएम से बगावत कर खुद की पार्टी बनाने की ठान ली है और गांव गांव जाकर लोगों से समर्थन की बात कर रहे हैं तो उधर राज्य के सीएम हेमंत सोरेन विधायकों के साथ बैठक कर पार्टी को मजबूत करने में लगे हैं। परिस्थितियां ऐसी बन गई हैं कि राज्य के कोल्हान प्रमंडल की धरती पर अब दोनों के एक-दूसरे के आमने-सामने होंगे। चंपई सोरेन ने फिलहाल हेमंत सोरेन की सरकार में मंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया है, लेकिन अब वह न तो अपने कार्यालय जा रहे हैं और न ही किसी सरकारी कार्यक्रम में शिरकत कर रहे हैं। 20 अगस्त की देर रात दिल्ली से लौटने के बाद वह लगातार अपने क्षेत्र में बने हुए हैं। वह गांव-गांव का दौरा और समर्थकों के साथ बैठक कर नया संगठन खड़ा करने की कवायद में जुटे हैं।

उन्होंने गम्हरिया में एक होटल के सभागार में महिला कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। उन्होंने इस कार्यक्रम की तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए लिखा, नारी शक्ति का यह उत्साह देखिए। अति अल्प सूचना पर आयोजित इस बैठक

शेष पृष्ठ 2 पर

अमित शाह के सितारे गर्दिश में

|| उमेश जोशी ||

जम्मू कश्मीर उन राज्यों में से है जहां बीजेपी और आरएसएस ने वर्षों तक मेहनत और कोशिशों का इन्वेस्टमेंट किया। जम्मू रीजन में तो बीजेपी का मामला ठीक है लेकिन कश्मीर घाटी पहुंचते ही पार्टी गायब हो जाती है। 370 का डंका पीटने के बाद भी 2024 के लोकसभा लड़ने का बीजेपी ने रिस्क नहीं लिया। जबकि यह माना जा रहा था कि 370 खत्म करने के बाद भगवा पार्टी राजनीतिक फायदा लेने के लिए आएगी। लेकिन लोकसभा चुनाव में जो नहीं हुआ उसकी भरपाई विधानसभा चुनाव में की जा सकती है। जे एंड के के चुनाव से ठीक पहले बीजेपी ने पुराना आजमाया हुआ मास्टर स्टॉक चला है। 4 साल बाद राम माधव जम्मू कश्मीर में री-लॉन्च हुए हैं। वो जी किशन रेड्डी के साथ मिलकर विधानसभा

चुनाव की तैयारी करेंगे।

4 साल पहले राम माधव बीजेपी के जम्मू कश्मीर के प्रभारी हुआ करते थे। उस वक्त बीजेपी ने पीडीपी के साथ मिलकर घर बने और उसके बाद जो कुछ हुआ वह सभी के सामने है। राम माधव ना सिर्फ प्रभारी पद से हटे बल्कि बीजेपी से आरएसएस में वापस चले गए। 4 वर्षों में वह लगभग सक्रिय राजनीति से नेपथ्य की ओर गुमनामी में ही नजर आए, कोई मीडिया कवरेज नहीं, कोई पूछ नहीं। 2024 में ऐसा क्या हुआ कि राम माधव को फिर से जम्मू कश्मीर का प्रभारी बनाया गया। जिस वक्त राम माधव को हटाया गया था सूत्र के हवाले से खबर आई थी कि अमित शाह से उनकी नहीं बन रही है। अमित शाह राम माधव को बिल्कुल पसंद नहीं करते। ऐसे में क्या जो सवाल उस समय थे वह अब नहीं रह गए? क्या आज अमित शाह राम माधव को पसंद करने लगे।

जी किशन रेड्डी को लेकर भी कई बातें सामने आई थी यह उसे दौर की बात है जब वह गृह राज्य मंत्री हुआ करते थे। सूत्रों के हवाले से उसे वक्त भी कई तरह की खबरें मीडिया में सामने आई थी कि जी किशन रेड्डी गिरिराज मंत्री बनाकर अमित शाह के

शेष पृष्ठ 2 पर

जम्मू-कश्मीर में मिलकर चुनाव लड़ेगी कांग्रेस-नेशनल कांफ्रेंस

|| विनीता यादव ||

जम्मू कश्मीर में चुनावी ऐलान के बाद से ही सियासी हलचल जबरदस्त तरीके से तेज है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे श्रीनगर के दौरे पर हैं। दोनों ही नेताओं ने नेशनल कांफ्रेंस के सुप्रीमों और जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला से मुलाकात की है। इस मुलाकात के बाद नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस के बीच जम्मू कश्मीर को लेकर चुनावी गठबंधन हो गया है। इसका ऐलान खुद फारूक अब्दुल्ला ने किया है। फारूक अब्दुल्ला ने यह भी बताया कि जल्द ही सीटों का ऐलान कर दिया जाएगा। साथ ही साथ दोनों दल मिलकर चुनावी घोषणा पत्र जारी करेंगे। फारूक अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि हम 90 सीटों

पर मिलकर चुनाव लड़ेंगे। इससे पहले राहुल ने कहा कि कांग्रेस पार्टी और इंडिया गठबंधन में भी हमारी प्राथमिकता है कि जम्मू-कश्मीर को जल्द से जल्द राज्य का दर्जा बहाल किया जाए। हमें उम्मीद थी कि चुनाव से पहले यह काम हो जाएगा, लेकिन चुनाव घोषित हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि यह एक कदम आगे है और हम उम्मीद कर रहे हैं कि जल्द से जल्द राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा और जम्मू-कश्मीर के लोगों के अधिकार, लोकतांत्रिक अधिकार उन्हें वापस मिलेंगे। आजादी के बाद यह पहली बार है कि कोई राज्य केंद्र शासित प्रदेश बना है।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। केंद्र शासित प्रदेश राज्य बन गए हैं, लेकिन यह पहली बार है कि राज्य केंद्र शासित प्रदेश बन गया है। इसलिए, हम अपने राष्ट्रीय घोषणापत्र में भी बहुत स्पष्ट हैं कि यह हमारी प्राथमिकता है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोगों को उनके लोकतांत्रिक अधिकार वापस मिलें। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोगों को मेरा संदेश है, हम आपकी हरसंभव मदद कर सकते हैं, कांग्रेस पार्टी हमेशा आपके साथ है। हम समझते हैं कि आप बहुत मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं, एक कठिन दौर, और हम हिंसा को खत्म करना चाहते हैं।

राज्यसभा एलओपी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में हम सबको मिलकर लड़ना चाहिए और विपक्ष को भी साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। आज वो (बीजेपी) परेशान हैं और इसीलिए आपने देखा होगा कि वो 2-3 बिल पास करना चाहते थे लेकिन विपक्ष के विरोध के कारण उन्होंने वापस ले लिया या फिर उन्हें संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे के सरकार पर गंभीर आरोप

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मनरेगा योजना को लेकर केंद्र सरकार की जमकर आलोचना की। खरगे ने आरोप लगाया कि मनरेगा की आज जो स्थिति है, वह प्रधानमंत्री मोदी के ग्रामीण भारत से विश्वासघात का जीता जागता स्मारक है। खरगे ने कहा कि 2005 में कांग्रेस के नेतृत्व वाली तत्कालीन यूपीए सरकार ने ग्रामीण भारत के करोड़ों लोगों को काम का अधिकार सुनिश्चित करने के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) लागू किया था।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा एक पोस्ट में खरगे ने लिखा कि वर्तमान में देश में 13.3 करोड़ सक्रिय श्रमिक

हैं जो कम मजदूरी, बेहद कम कार्यदिवस और जॉब कार्ड रद्द होने के बावजूद मनरेगा पर निर्भर हैं। खरगे ने आरोप लगाया कि प्रौद्योगिकी और आधार का उपयोग करने की आड़ में मोदी सरकार ने सात करोड़ से ज्यादा श्रमिकों के जॉब कार्ड रद्द कर दिए हैं। इसके चलते ये लोग मनरेगा से कट गए हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने

शेष पृष्ठ 2 पर

संपादकीय

लेटरल भर्ती का विरोध: सरकार ने पीछे खींचे कदम

केंद्र सरकार द्वारा यूपीएससी के पदों पर बिना आरक्षण लैटरल भर्ती 2018 के बाद से लगातार किए जा रही है, लेकिन इस मामले ने 2024 में तूल पकड़ लिया है। 2018 से लेकर अभी तक केंद्र सरकार विभिन्न मंत्रालयों में विशेषज्ञों के नाम पर लैटरल भर्ती समूह में करती चली आ रही है। इस बार केंद्र सरकार द्वारा 45 पदों के लिए विज्ञापन प्रकाशित कराया गया। पिछले 6 वर्षों में लगभग 200 पदों पर नियुक्तियां हो चुकी हैं। उसके बाद से आरक्षण मुद्दे पर पूरे देश में बवाल मचा हुआ है। मोदी सरकार द्वारा 2018 के बाद से लैटरल नियुक्तियां समूह में की जा रही हैं। अभी तक यूपीएससी परीक्षा के माध्यम से इनका चयन होता था। 15-20 वर्ष की सेवा के पश्चात, चयनित अधिकारी उप सचिव, संयुक्त सचिव और सचिव पद पर पहुंचते थे। अब सीधे ही भर्ती विभिन्न मंत्रालयों में उपसचिव, संचालक और संयुक्त सचिव के रूप में की जा रही है। एक तरह से यह नियमों का दुरुपयोग है। संवैधानिक प्रावधानों का पालन भी सरकार नहीं कर रही है। जिसके कारण यह मामला अब तूल पकड़ रहा है। एनडीए के सहयोगी दलों ने भी इस तरह से की जा रही नियुक्तियों का विरोध शुरू कर दिया है। जनता दल यू ने इस तरह की भर्ती पर गंभीर चिंता जताई है। वहीं केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने भी स्पष्ट रूप से चेतावनी देते हुए कहा है कि इस तरह की नियुक्तियों में आरक्षण का पालन किया जाना चाहिए। प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने भी इसे संविधान विरोधी बताते हुए आरक्षण खत्म करने की मांग की है। कांग्रेस ने आरोप लगाया है, सरकार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा से जुड़े हुए लोगों को प्रमुख पदों पर सीधे नियुक्त कर रही है। इस तरह की नियुक्तियों से दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्ग के हितों का नुकसान हो रहा है। संविधान में जिस तरह से कार्यपालिका में अधिकारियों का चयन किया जाना है, उसका पालन भी सरकार नहीं कर रही है। सरकार में पूंजीपतियों का सीधा हस्तक्षेप बढ़ रहा है। लैटरल नियुक्तियों में उन लोगों की भर्ती हो रही है, जो कारपोरेट जगत से हैं। वे सीधे सरकारी सेवा के महत्वपूर्ण पदों पर आ रहे हैं। इनकी नियुक्ति विशिष्ट तरीके से की जा रही है। कांटेक्ट पर नियुक्ति होने के कारण यह कभी भी छोड़ कर जा सकते हैं। इन पर जिम्मेदारी भी तय नहीं की जा सकती है। सेबी में माधवी बुच को पहले डायरेक्टर और फिर अध्यक्ष बनाने का मामला भी विवादों में आ गया है। जो खुलासे हुए हैं, वह बड़े आश्चर्यचकित करने वाले हैं। सरकार के ऊपर यह आरोप लग रहा है कि औद्योगिक समूहों के अधिकारियों को पिछले दरवाजे से सरकारी पदों पर नियुक्ति की जा रही है। यह अधिकारी औद्योगिक समूह के हित में नीतियां बनाते हैं। संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन हो रहा है। सरकार जब किसी निर्णय में फंसने लगती है तो इस स्थिति में सरकार कांग्रेस के ऊपर ठीकरा फोड़कर बचने का रास्ता बनाती है। सरकार की ओर से यही प्रयास किया गया है। इस तरह की नियुक्तियां 50 वर्षों से हो रही हैं। 1976 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को लैटरल एंट्री के माध्यम से वित्त सचिव बनाया गया था। राजीव गांधी की सरकार ने सेम पित्रोदा को नॉलेज कमीशन का अध्यक्ष बनाया था। विमल जालान को मुख्य आर्थिक सलाहकार रिजर्व बैंक बनाया गया था। 2009 में कौशिक बसु को केंद्र सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार के पद पर नियुक्त किया गया था। रघुराम राजन को भी वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया था। मोंटेक सिंह अहलुवालिया 2004 से 2014 तक योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद पर रहे। 2009 में नंदन नीलकेणी को भी यूआइडीएआइ का मुखिया बनाया गया था। पिछले 50 वर्षों में केंद्र सरकार में विशेषज्ञ के रूप में जिन लोगों की नियुक्ति हुई थी, उनकी संख्या वर्तमान की तुलना में बहुत कम है। वित्त और तकनीकी के जानकार उस समय देश में बहुत कम विशेषज्ञ थे। जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जानकारी और विशेषज्ञता रखते थे। पिछले 6 वर्षों में मोदी सरकार द्वारा उप सचिव, सचिव और संचालक स्तर पर जो नियुक्तियां की जा रही हैं। उसमें हमेशा से भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी या भारतीय सेवा के अधिकारी ही नियुक्त किए जाते थे। लैटरल भरती का मुद्दा अब गरमा गया है। इसे उच्च पदों पर आरक्षण खत्म करने से लेकर जोड़ा जा रहा है। सरकार ने अपनी जिद नहीं छोड़ी, ऐसी स्थिति में एनडीए सरकार में दरार पड़ सकती है। केंद्र सरकार पहले ही जाति आरक्षण और संविधान को खत्म करने के आरोप में बुरी तरह से घिरी हुई है। बजट सत्र में भी नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने वित्त मंत्रालय में अधिकारियों की नियुक्ति को लेकर वित्त मंत्री को सदन के अंदर घेरा था। इस बार केंद्र में गठबंधन की सरकार है। आरक्षण जैसे संवेदनशील मसले पर यदि उसके सहयोगी दल उसका साथ नहीं देंगे, तो सरकार के लिए बड़ी मुसीबत खड़ी हो सकती है। सरकार के अस्तित्व पर भी संकट आ सकता है। जिसके कारण देश में राजनीतिक हलचल बड़ी तेजी के साथ बढ़ गई है। लगातार हुए विरोध का नतीजा ही कहेंगे कि अब केंद्र सरकार ने लेटरल एंट्री को लेकर अपने कदम वापस पीछे खींच लिए हैं। दरअसल लेटरल भर्ती मामले को लेकर मचे राजनीतिक बवाल के बीच में ही कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उल्लेख करते हुए संघ लोक सेवा आयोग को एक पत्र लिखा है। इस पत्र के माध्यम से मंत्री ने संघ लोक सेवा आयोग से लेटरल एंट्री के आधार पर निकाली गई भर्तियों को वापस लेने के लिए कहा है। इसमें उल्लेख किया गया है कि चूंकि लेटरल एंट्री के आधार पर निकाली गई भर्तियों में आरक्षण का प्रावधान नहीं किया गया है, इसलिए इसे ध्यान में रखते हुए इसे वापस ले लिया जाए। इससे यह तो स्पष्ट है कि गठबंधन वाली यह सरकार ज्यादा विरोध बर्दाश्त नहीं कर सकती है, यदि ऐसा हुआ तो कुर्सी जाने का खतरा सदा बना रहेगा। ऐसे में अपने कदम वापस ले सरकार ने लोगों की नाराजगी से बचने का काम किया है।

पृष्ठ 1 का शेष

बैसाखी पर मोदी सरकार

एनडीए के साथियों के सहारे की जरूरत पड़ी। पीएम मोदी के नेतृत्व में बनी एनडीए गठबंधन की ये सरकार तीसरे महीने में प्रवेश कर चुकी है। लेकिन इस बार कई मौके आए, जब सरकार को अपने कदम वापस खींचने पड़े। इसमें 4 बिल खूब चर्चा में रहे, जहां सरकार को आखिरी वक्त में अपना फैसला बदलना पड़ा।

केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों लेटरल एंट्री

हाल ही में यूपीएससी (यूपीएससी) ने केंद्र सरकार के अलग-अलग मंत्रालयों के 45 पदों के लिए लेटरल इंट्री का नोटिफिकेशन जारी किया था। इस पर जमकर विवाद हुआ। विपक्ष ने आरक्षण के मुद्दे पर मोदी सरकार को घेरा। साथ ही बीजेपी की सहयोगी पार्टियों जेडीयू, एलजेपी (रामविलास पासवान) और जितन राम मांझी की पार्टी ने इसका विरोध किया। हालांकि, पीएम मोदी आदेश जारी कर इस विज्ञापन को वापस लेने का आदेश दिया।

वक्फ बोर्ड बिल

तीसरे कार्यकाल में मोदी सरकार वक्फ बोर्ड संशोधन बिल लेकर आई थी। बिल को लेकर सदन में जमकर हंगामा हुआ। मोदी सरकार चाहती तब बिल को पास करा सकती थी, लेकिन बढ़ते विवाद के देखकर मोदी सरकार ने बिल को जेपीसी (ज्वाइंट पार्लियामेंट्री कमेटी) को भेज दिया।

ब्रॉडकास्ट बिल 2024

तीसरे कार्यकाल के पहले ही मानसून सत्र में केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव बिल को पेश किया था। इस बिल को लेकर न केवल विपक्ष बल्कि डिजिटल न्यूज पब्लिशर्स और इंडिविजुअल कॉन्टेंट क्रिएटर्स ने केंद्र सरकार के कदम का विरोध किया। अंततः मंत्रालय ने बिल को वापस लेने और इस नए मसौदे के साथ बिल लाने की जानकारी दी।

लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस बिल

वित्त मंत्री निर्मला सितारमण 23 जुलाई को बजट सत्र में यह बिल लेकर आईं थीं। इसमें मोदी सरकार ने कुछ प्रावधान किए थे, जिससे बिजनेस मैन से लेकर आम आदमी भी काफी सरकार के प्रति नाराजगी जाहिर की थी। बहरहाल, मोदी सरकार को चौतरफा आलोचना झेलनी पड़ी, जिसके बाद सरकार ने इसमें संशोधन कर जनता के पक्ष में कर दिया।

अमित शाह के सितारे गर्दिश में

अंदर में काम करते हुए असहाय महसूस कर रहे थे और उन्होंने अपने दिल की बात प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात कर कहीं भी थी। बाद में नित्यानंद राय को गृह राज्य मंत्री बनाए जाने और जी किशन रेड्डी को आंध्र प्रदेश की राजनीति में वापस भेजे जाने के फैसले से इन अटकलें को थोड़ा सा बल भी मिला। 2024 में फिर उसी की किशन रेड्डी को जम्मू कश्मीर का सब प्रभारी बनाया गया। राम माधव और जी किशन रेड्डी को जम्मू कश्मीर का प्रभारी बनाया गया अमित शाह से जिनकी बिल्कुल भी अच्छी ट्यूनिंग नहीं है।

गुजरात में नमस्ते ट्रंप का कार्यक्रम और दिल्ली में दंगे तो आप सभी को याद होगा जब बेकाबू होते हालात को संभालने के लिए सा अजीत डोभाल जमीन पर मौजूद नजर आए थे वही 370 हटाने का अमित शाह को भले ही दिया जाता हो लेकिन ठीक उसी वक्त दिल्ली से 1000 किलोमीटर दूर घाटी में अजीत डोभाल सड़कों पर घूमते नजर आ रहे थे बारामूला में दुकानदारों से बात कर रहे थे। उन्हें समझा रहे थे। सिग्नल साफ था कि अमित शाह के अलावा कोई और शख्स भी मौजूद है जो जम्मू कश्मीर और दिल्ली दंगे जैसे संवेदनशील मुद्दों को जमीन पर उतरकर हैंडल कर रहा है।

राजनीतिक हलकों में तो ऐसी भी खबरें है कि मोदी जी अमित शाह से बहुत ज्यादा खुश नहीं है।

इतना लंबा साथ है कि वह खुलकर कुछ कह नहीं सकते। राजनाथ सिंह के कद को लेकर भी चर्चा तेज है कि 2024 चुनाव परिणाम आने के बाद उनकी इंपॉर्टेंस बीजेपी में और बढ़ गई है।

कई तरह की शिकायतें संगठन को लेकर जो मोदी जी तक भी पहुंची है। शिकायतें उत्तर प्रदेश से लेकर कई राज्यों में संगठन के काम-काज को लेकर है। आपस में बातचीत का सिलसिला चला करता था वो कहीं न कहीं टूट गया है। अब कुछ लोगों की मर्जी चलती है। कई नियुक्तियां ऐसी भी हैं जो बाद में बैकफायर कर गई। बहुत सारी शिकायतें अलग-अलग राज्यों से पीएमओ तक पहुंचने लगी।

इसलिए अब पीएम मोदी ने भी संगठन को लेकर थोड़ा ध्यान देना शुरू किया है। अब चर्चा ये है कि आरएसएस के साथ नरेंद्र मोदी अलग से बात कर रहे हैं और इसमें सकेंड इन कमांड या थर्ड इन कमांड साथ में नहीं रहता।

राजनाथ सिंह और नितिन गडकरी से भी पीएम मोदी इन दिनों ज्यादा सलाह ले रहे हैं। धीरे धीरे मोदी अमित शाह को साइड लाइन करते जा रहे हैं। कुल मिलाकर कहे तो बीजेपी में कोर्स करेक्शन जारी है और इसकी बानगी आने वाले वक्त में देखने को मिलेगी।

अबकी बार हेमंत बनाम चंपई

के लिए हॉल छोटा पड़ गया। अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत से ही, मैंने सदैव उन लोगों के लिए आंदोलन किया है, जिनके बदन पर कपड़े और पैरों में चप्पल तक नहीं होते थे। चंपई ने लिखा, अपने जीवन के इस नये अध्याय में, भले नया संगठन बने अथवा किसी साथी से हाथ मिलाएं, लेकिन मुद्दे झारखंड की जनता के ही रहेंगे। उन लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास रहेगा, जिन्होंने इस नये राज्य के साथ अपने उज्जवल भविष्य के सपने देखे थे। इधर, सीएम हेमंत सोरेन भी चंपई की बगावत से संभावित डैमेज कंट्रोल की रणनीति में जुट गए हैं। वह अपनी विधायक पत्नी कल्पना सोरेन के साथ जमशेदपुर पहुंचे और पार्टी के सांसद-विधायकों के साथ बैठक कर एकजुटता जताई। सूत्रों के मुताबिक, उन्होंने विधायकों से कहा कि विधानसभा चुनाव में हमें पिछला प्रदर्शन दोहराना है।

पिछले चुनाव में कोल्हान प्रमंडल की 14 में से 13 विधानसभा सीटों पर झामुमो-कांग्रेस ने जीत दर्ज की थी, जबकि एक सीट निर्दलीय के खाते में गई थी। बैठक में सांसद जोबा मांझी, मंत्री दीपक बिरुआ, विधायक रामदास सोरेन, मंगल कालिंदी, समीर मोहंती, निरल पूर्ति, संजीव सरदार, सुखराम उरांव और सविता महतो मौजूद रहे। हेमंत सोरेन 28 अगस्त को एक बार फिर कोल्हान प्रमंडल के मुख्यालय चाईबासा में रहेंगे।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे के...

दावा किया कि मनरेगा के लिए इस साल का बजट आवंटन कुल बजटीय आवंटन का सिर्फ 1.78 प्रतिशत है, जो 10 साल का सबसे कम है।

मनरेगा के तहत दी जाने वाली मजदूरी कम

खरगे ने तर्क दिया कि मोदी सरकार द्वारा कम आवंटन इस योजना को कृत्रिम रूप से दबाने की कोशिश है। उन्होंने कहा कि हाल ही में संसद की स्थायी समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि मनरेगा के तहत दी जाने वाली दैनिक मजदूरी अपर्याप्त है। उदाहरण के लिए, 2014 से उत्तर प्रदेश के लिए दैनिक मजदूरी दर में प्रति वर्ष सिर्फ 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि महंगाई इससे कहीं अधिक बढ़ी है। उन्होंने कहा, आज एक मजदूर औसतन मात्र 213 रुपये प्रतिदिन कमाता है। लेकिन कांग्रेस राष्ट्रीय न्यूनतम मजदूरी 400 रुपये प्रतिदिन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सोनिया गांधी ने पॉलिएस्टर झंडों के इस्तेमाल पर मोदी सरकार को घेरा

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने मशीन–निर्मित पॉलिएस्टर झंडों के इस्तेमाल के लिए मोदी सरकार की आलोचना की और तिरंगे के एकमात्र कपड़े के रूप में खादी को अपनाए जाने का आह्वान किया। सोनिया गांधी ने यह भी कहा कि खादी को राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में उसका उचित स्थान मिलना चाहिए।

पॉलिएस्टर झंडों के इस्तेमाल पर मोदी सरकार को घेरा

उन्होंने अंग्रेजी दैनिक द हिंदू में लिखे एक लेख में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा स्वतंत्रता दिवस से पहले के सप्ताह में हर घर तिरंगा अभियान के लिए नए सिरे से आह्वान किया जाना राष्ट्रीय ध्वज और देश के लिए इसके महत्व पर सामूहिक रूप से आत्मावोलकन करने का अवसर प्रदान करता है। सोनिया गांधी ने कहा कि उनका (मोदी का) राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान व्यक्त करना और एक ऐसे संगठन के प्रति निष्ठा रखना नैतिक रूप से दोहरापन है जो इस ध्वज के प्रति उदासीन रहा है। उन्होंने कहा कि मशीन–निर्मित, पॉलिएस्टर के झंडों को बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है, जिसमें कच्चा माल अक्सर

चीन से आयात किया जाता है।

खादी के इस्तेमाल पर दिया जोर

सोनिया ने इस बात का उल्लेख किया कि भारतीय ध्वज संहिता के अनुसार, ऐतिहासिक रूप से राष्ट्रीय ध्वज को हाथ से काते गए और हाथ से बुने गए ऊन/कपास/रेशम/ खादी के टुकड़े से बनाया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि खादी एक मोटा, लेकिन मजबूत कपड़ा है जिसे महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व में खुद काता और बुना था तथा इसका हमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्मृति में एक विशेष अर्थ है। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख ने कहा, खादी हमारे गौरवशाली अतीत का प्रतीक है और भारतीय आधुनिकता और आर्थिक जीवन शक्ति का प्रतीक भी है।

खादी के झंडे को कर के दायरे में रखा- सोनिया गांधी

सोनिया गांधी ने कहा, 2022 में हमारी आजादी की 75वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर, सरकार ने मशीन निर्मित...पा ॅलिएस्टर...बंटिंग को शामिल करने के लिए ध्वज संहिता में संशोधन किया। साथ ही पॉलिएस्टर के झंडे को वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) से छूट दी गई है।

खादी के झंडे को कर के दायरे में रखा गया है। उन्होंने अपने लेख में कहा कि सरकार बाजार को विनियमित करने में विफल रही है और अर्ध–मशीनीकृत चरखों से काती गई खादी को पारंपरिक हाथ से काती गई खादी के टैग के तहत धड़ल्ले से बेचा जा रहा है। कांग्रेस नेता ने यह भी कहा, यह हमारे खादी कातने वालों के लिए नुकसानदेह है, जिनकी कड़ी मेहनत के बावजूद मजदूरी प्रतिदिन 200–250 रुपए से अधिक नहीं है।

कांग्रेस ने सेबी प्रमुख के इस्तीफे - जेपीसी के गठन की मांग को लेकर प्रदर्शन किया

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

कांग्रेस की दिल्ली इकाई के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) की प्रमुख माधवी बुच के इस्तीफे और अदाणी समूह से जुड़े मामले की जांच के लिए एक संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के गठन की मांग को लेकर यहां प्रदर्शन किया।

जंतर–मंतर पर आयोजित विरोध प्रदर्शन में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव, वरिष्ठ नेता सचिन पायलट, कन्हैया कुमार और उदित राज सहित अन्य लोग शामिल हुए।

देवेंद्र यादव ने कहा कि जिस तरह से घोटाले का खुलासा हुआ है, उसे देखते हुएसेबी प्रमुख को इस्तीफा देना चाहिए या फिर उन्हें बर्खास्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अदाणी समूह से जुड़े 'घोटालों' की जेपीसी से जांच जरूरी है।

फोटो : जगन नेगी

अमेरिकी संस्था हिंडनबर्ग रिसर्च ने हाल में अपनी एक रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि सेबी की प्रमुख बुच और उनके पति की अदाणी समूह से जुड़ी कथित अनियमितताओं में इस्तेमाल किए गए अस्पष्ट 'विदेशी फंड' में हिस्सेदारी थी। सेबी प्रमुख बुच और उनके पति ने एक संयुक्त बयान जारी कर हिंडनबर्ग के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए इसे पूरी तरह से बेबुनियाद बताया था।

केजरीवाल को झटका
कोर्ट ने फिर बढ़ाई न्यायिक हिरासत

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल को फिर झटका लगा है। आबकारी नीति मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने सीबीआई केस में केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 27 अगस्त तक बढ़ा दी है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने से इनकार कर दिया था और गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर सीबीआई से जवाब मांगा था। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भूइयां की पीठ के समक्ष जैसे ही सुनवाई शुरू हुई, केजरीवाल के वकील अभिषेक सिंघवी ने कहा कि उन्हें कथित घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में तीन बार अंतरिम जमानत मिली है और पीएमएलए के तहत मामलों में जमानत दिए जाने के लिए कठोर शर्तें भी लगाई हैं। सिंघवी ने 20 जून को निचली अदालत द्वारा दी नियमित जमानत के साथ ही 10 मई और 12 जुलाई को पारित सुप्रीम कोर्ट के अंतरिम जमानत आदेशों का हवाला दिया। उन्होंने पीठ को सूचित किया कि दिल्ली हाईकोर्ट ने मौखिक रूप से निचली अदालत के 20 जून के आदेश पर रोक लगा दी थी।

सिंघवी ने दलील दी कि जब केजरीवाल को पीएमएलए के तहत लगाई शर्तों के बावजूद जमानत दी जा सकती है तो उन्हें सीबीआई मामले में नियमित जमानत देने से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि भ्रष्टाचार रोकथाम कानून में वैसे कठोर प्रावधान नहीं हैं जैसे कि धन शोधन रोधी कानून में हैं। सिंघवी ने कहा कि मुझे यह कहना अच्छा नहीं लगता लेकिन मैंने यह बात हर जगह कही है।

पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ.शंकर दयाल शर्मा को उनकी 106वीं जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित किए

अखिल भारतीय स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक संघ, राजधानी स्वतंत्र पत्र लेखक मंच के राष्ट्रीय महामंत्री, नेशनल एजुकेशनल मीडिया नेटवर्क के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष शिक्षाविद् डॉ. दयानंद वत्स भारतीय ने संघ के मुख्यालय बरवाला में भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय स्वर्गीय डॉ.शंकर दयाल शर्मा जी की 106वीं जयंती पर उन्हें कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। वत्स ने डॉ.शंकर दयाल शर्मा के साथ अपनी मधुर स्मृतियों को याद करते हुए कहा कि मुझे लगभग दस वर्षों तक उनके सान्निध्य में पुष्पित और पल्लवित होने का सौभाग्य मिला।

वे अखिल भारतीय स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक संघ के संरक्षक भी रहे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में मेरे संपादन में प्रकाशित समाचार पत्र नेशनल मीडिया नेटवर्क का विमोचन भी अपने कर कमलों द्वारा किया था। वत्स ने कहा कि डॉ.शर्मा पत्रकारों, लेखकों, कलाकारो, साहित्यकारों का विरोध सम्मान करते थे। उनके मन में किसानों के प्रति आदर ओर सम्मान की भावना थी।

वे हमें अक्सर कहते थे कि अपनी जमीन मत बेचना, इसे बचाकर रखना। अत्यंत मृदुभाषी, विनम्र ओर शांत स्वभाव के डॉ.शर्मा ने अपना राजनीतिक जीवन ईमानदारी ओर सादगी से जिया। डॉ.शर्मा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष, भोपाल के मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र, पंजाब ओर आंध्रप्रदेश के राज्यपाल भी रहे। उनका जीवन तपस्वी की तरह रहा। दया, करुणा, सत्य, अहिंसा उनके हृदय में कूट कूटकर भरी थी।

बांग्लादेश के हिन्दुओं पर अत्याचार बन्द करो

॥ प्रवीण आर्य ॥

आर्य समाज द्वारा आर्य समाज कबीर बस्ती, विजय नगर, देव नगर, वजीर पुर, डिस्ट्रिक्ट पार्क लोनी रोड और डेरावल नगर में बांग्लादेश में मारे गए हिंदुओं की आत्मा की शांति के लिए यज्ञ किया गया और हिंदुओं की हत्या और लूट के विरोध में एक आक्रोश सभा आयोजित की गई।

केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा है कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार बंद होने चाहिए। उनकी लूटपाट और हत्याएं निंदनीय और मानवता के नाम पर कलंक हैं। वे बांग्लादेश के सम्मानित नागरिक हैं और उन्हें भी जीने का अधिकार है।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार को अब हस्तक्षेप करना चाहिए या फिर बांग्लादेश को दो हिस्सों में विभाजित कर हिंदुओं के लिए एक अलग राष्ट्र बनाया जाना चाहिए। वीर भोग्य वसुंधरा वेदों का संदेश है कि केवल बहादुर लोग ही पृथ्वी का आनंद ले सकते हैं, इसलिए हिंदुओं को मजबूत होना चाहिए और जातिवाद, क्षेत्रवाद से मुक्त होना चाहिए।

हमें उठना होगा और खुद को संगठित करना होगा क्योंकि सभी को आत्मरक्षा का अधिकार है। सभा को आचार्य महेंद्र भाई, ओम सपरा, आचार्य प्रेम पाल शास्त्री, पार्षद विकास सेठी, सुशील बाली, रामकुमार आर्य, वेद प्रकाश आर्य, अविनाश चुग, संतोष शास्त्री, सतीश शास्त्री, सोनिया संजू, यज्ञवीर चौहान आदि ने भी संबोधित किया। सभी ने विपक्ष का समर्थन किया। चुप रहने पर दुख जताया।

बदलापुर की घटना दुर्भाग्यपूर्ण: प्रदर्शन लोगों की नाराजगी को दर्शाते हैं: पवार

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के अध्यक्ष शरद पवार ने बदलापुर के एक स्कूल में दो बच्चियों के यौन उत्पीड़न की घटना को दुर्भाग्यपूर्ण करार देते हुए कहा कि इसके बाद हो रहे प्रदर्शन लोगों के आक्रोश को दशार्ते हैं।

पवार ने यहां पार्टी कार्यालय में संवाददाताओं से कहा कि दुर्भाग्यपूर्ण घटना से आक्रोशित हजारों लोग सड़कों पर उतरे और रेल सेवाओं को अवरुद्ध कर दिया।

उन्होंने कहा कि यह जनता के बीच असंतोष की भावना को दशार्ता है क्योंकि सरकार ने अपराध पर उस तरह से कार्रवाई नहीं की, जैसे की जानी चाहिए थी।

जब तक न्याय नहीं मिलेगा-पीछे नहीं हटेंगे

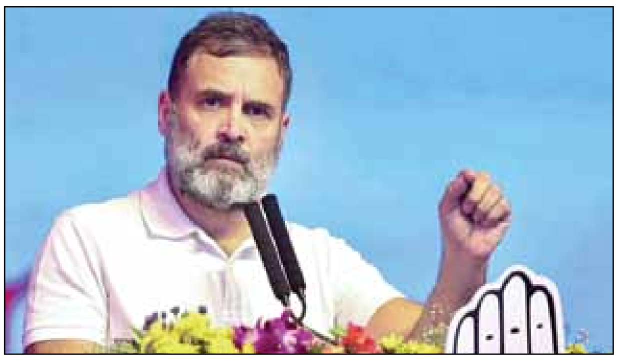

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता राहुल गांधी अपने संसदीय क्षेत्र रायबरेली पहुंचे हैं। यहां उन्होंने दलित युवक अर्जुन पासी के घर पहुंच उनकी माता और पिता से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी है। उन्होंने कहा कि दलित की हत्या के मास्टरमाइंड को बचाया जा रहा है और जब तक न्याय नहीं मिलेगा, तब तक वो पीछे नहीं हटेंगे।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पीड़ित परिवार से करीब 10 मिनट बातचीत की। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि एक दलित युवा को बेरहमी से मारा गया। पीड़ित परिवार को धमकाया गया है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि हत्या के मास्टरमाइंड पर एसपी कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। मामूली छोटे-मोटे लोगों को पकड़ा जा रहा है। यहां राहुल ने जोर देकर कहा कि मैं चाहता हूं कि यूपी में प्रत्येक वर्ग का आदर-सम्मान हो और सभी को न्याय मिले। उन्होंने आगे कहा कि जब तक आदिवासी परिवार को न्याय नहीं मिलेगा, तब तक वो पीछे हटने वाले नहीं हैं। राहुल गांधी ने पीड़ित आदिवासी माता की बात को सभी के सामने रखते हुए कहा कि अर्जुन की माता जी से मैंने बात की है। उन्होंने मुझे बताया, कि उनका छोटा बेटा बाल काटने का काम करता है। कुछ लड़के हैं जो उसके पास आते हैं और बाल कटवाते हैं, और बिना पैसे दिए चले जाते हैं। ऐसे में आखिरी बार जब वो आए तो उनसे उनके बेटे ने पैसे मांगे। बेटे ने उनसे कहा, कि आज मेरे पैसे दे दीजिए। इसके बाद ही उसकी हत्या कर दी गई। राहुल ने कहा कि यह तो घोर अन्याय है, परिवार के साथ ही समाज के खिलाफ। ऐसे में पीड़ित परिवार को न्याय मिलना ही चाहिए। जब तक न्याय नहीं मिलता वो डटे रहेंगे।

सरेआम गोली मारकर की गई थी हत्या

गौरतलब है कि अर्जुन पासी की 9 दिन पूर्व सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। एक अन्य आरोपी विशाल सिंह छतोओ ब्लाक प्रमुख संगीता कोरी पत्नी बबलू का प्रतिनिधि बताया गया है। बताया जाता है कि संगीता कोरी ने तो चुनाव जीतने के बाद ही भाजपा ज्वॉइन कर ली थी और आरोपी विशाल अभी फरार है।

मणिपुर में बगावत
मुख्यमंत्री के खिलाफ विधायकों ने खोला मोर्चा

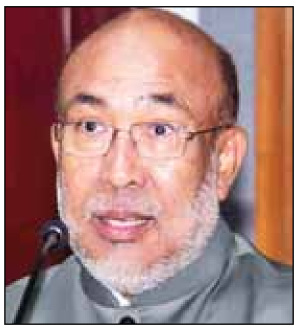

भले ही मणिपुर में हिंसा और तनाव का माहौल थम गया है लेकिन, सियासी घमासान बढ़ गया है। राज्य के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह के खिलाफ अभी तक विपक्ष हमलावर था अब उनके अपने ही सवाल उठाने लगे हैं। भाजपा के ही 7 विधायकों ने सीएम बीरेन सिंह के खिलाफ जांच के लिए आयोग गठित करने की मांग की है।

बताया जा रहा है कि कुल 10 कूकी विधायकों ने जांच की मांग की है, जिनमें से 7 सत्ताधारी दल भाजपा के ही हैं। इन लोगों का कहना है कि हिंसा की घटनाओं की जांच के लिए आयोग गठित होना चाहिए। इसमें यदि एन.बीरेन सिंह को दोषी पाया जाए तो उनके खिलाफ ऐक्शन हो। इन विधायकों ने साझा बयान जारी कर कहा कि सीएम बीरेन सिंह की भूमिका संदिग्ध थी। उन्होंने कूकी समुदाय के नरसंहार की छूट दी थी। वहीं राज्य सरकार ने 7 अगस्त को जारी किए गए टेप को फर्जी करार दिया है। सरकार ने कहा कि यह टेप फर्जी है, जिसके जरिए अफवाहें फैलाई जा रही हैं। इस मामले में केस दर्ज कर लिया गया है और उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी, जो इसके प्रसार में जुटे हैं।

दरअसल सीएम बीरेन सिंह मैतेई समुदाय से आते हैं। बीते साल मैतेई और कूकी समुदाय के बीच ही हिंसा भड़की थी। इन विधायकों ने मणिपुर टेप्स के नाम से एक ऑडियो टेप भी जारी किया है। इन लोगों ने कहा कि सीएम ने अपने रवैये से मैतेई समुदाय के उपद्रवी तत्वों को छूट दी थी। विधायकों ने कहा कि सीएम ने हिंसा की छूट दी थी। यही नहीं इन विधायकों ने कहा कि होम मिनिस्टर अमित शाह जब मणिपुर आए तो उन्होंने सीएम बीरेन सिंह को इस बात के लिए फटकार लगाई थी कि जनता पर बमों का प्रयोग न किया जाए। इन विधायकों का कहना है कि पूरे राज्य से करीब 5000 हथियार पुलिस बल से लूटे गए हैं, लेकिन इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हो सकी है।

इन लूटे हुए हथियारों का इस्तेमाल ही हिंसा भड़काने के लिए किया गया था। इन लोगों ने कहा कि सीएम बीरेन सिंह खुद यह कहते सुने जा सकते हैं कि उन्होंने कहा कि 300 कूकी मारे गए हैं। वह मुझे गाली दे सकते हैं, लेकिन मैतेई तो ऐसा नहीं करेंगे। इस तरह भाजपा के ही 7 विधायकों के मुख्यमंत्री के खिलाफ उतरने से पार्टी की मुश्किल भी बढ़ गई है और सीएम पर ऐक्शन का दबाव भी है।

योगी का एक्शन: सपा नेता मोईद खान के मल्टी कॉम्प्लेक्स पर चला बुलडोजर

अयोध्या जिला प्रशासन ने सपा नेता और अयोध्या बलात्कार के आरोपी मोइद खान की बेकरी को ध्वस्त करने के कुछ दिनों बाद उन पर और कड़ी कार्रवाई की है। अधिकारियों ने उसके शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के एक तिहाई हिस्से को ध्वस्त कर दिया, जो अवैध रूप से सरकारी जमीन पर बनाया गया था। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, अधिकारियों ने पहले कहा था कि खान के स्वामित्व वाले शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का निर्माण सरकारी जमीन पर अवैध रूप से कब्जा करके किया गया था; इसलिए, कॉम्प्लेक्स का एक तिहाई हिस्सा गिरा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि कॉम्प्लेक्स खाली करा लिया गया है, और आज एक बुलडोजर अवैध रूप से निर्मित इमारत को गिरा देगा।

इस बीच, मामले में एक और बड़ी घटना में, अयोध्या सामूहिक बलात्कार पीड़िता की सुरक्षा बढ़ा दी गई है, जिसे अब केजीएमयू, लखनऊ में गर्भपात कराने के बाद उसके परिवार के साथ भदरसा कस्बे में एक घर में स्थानांतरित कर दिया गया है। अधिकारियों के अनुसार, अयोध्या सामूहिक बलात्कार पीड़िता और उसके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महिला कांस्टेबलों सहित 30 से अधिक सुसज्जित और सशस्त्र पुलिस कर्मियों को चौबीसों घंटे तैनात किया गया है, जो कथित तौर पर लगातार खतरे में हैं।

इससे पहले योगी आदित्यनाथ ने दुष्कर्म और छेड़खानी की कुछ घटनाओं में राज्य के मुख्य विपक्षी दल सपा से कथित तौर पर जुड़े लोगों की भूमिका की ओर संकेत करते हुए तंज किया कि अयोध्या, गोमतीनगर व कन्नौज की घटना ही समाजवादी पार्टी का नवाब ब्रांड है, यही सपा की असली पहचान है। लखनऊ के गोमतीनगर में बारिश के दौरान छेड़छाड़ के मामले को लेकर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या, गोमतीनगर व कन्नौज की घटना ही समाजवादी पार्टी का नवाब ब्रांड है। यहां जारी एक आधिकारिक बयान के अनुसार, सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए योगी ने कहा, कोलकाता की अराजकता पर चिकित्सक व आधी आबादी आंदोलित है, लेकिन सपा मुखिया दुष्कर्मियों व कोलकाता सरकार का बचाव कर रहे हैं।

भारतीय विद्या भवन में अंग्रेजी-संस्कृत शब्दकोश का विमोचन

फोटो : कमलजीत

भारतीय विद्या भवन के दिल्ली केंद्र में अंग्रेजी-संस्कृत शब्दकोश का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जिन्होंने इस शब्दकोश का विमोचन किया। विशिष्ट अतिथियों में बनवारीलाल पुरोहित, प्रो. महेश वर्मा और भारतीय विद्या भवन के संयुक्त कार्यकारी सचिव जगदीश लखानी एवं अशोक प्रधान,निदेशक भारतीय विदया भवन , दिल्ली केन्द्र शामिल थे। उपराष्ट्रपति ने इस शब्दकोश को प्राचीन और आधुनिक ज्ञान के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में सराहा। इस कार्यक्रम ने संस्कृत की सांस्कृतिक महत्ता और भारत की धरोहर को संरक्षित करने में भारतीय विद्या भवन की भूमिका पर बल दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ ' इस अवसर पर क्रेटिव फिल्म डायरेक्टर सुनील पाराशर ने कहा कि भारतीय विद्या भवन काफी वर्षो से हर उम्र के लोंगो को उनकी रुचि अनुसार कोर्स करवा कर उनके लिए नई दिशा दे रहा है।

छात्राओं से यौन उत्पीड़न मामले में सांसद सुले ने किया सरकार के खिलाफ प्रदर्शन

महाराष्ट्र में एनसीपी (एससीपी) सांसद सुप्रिया सुले ने कार्यकर्ताओं के साथ बदलापुर के एक स्कूल में दो छात्राओं के साथ हुए यौन उत्पीड़न को लेकर शिंदे सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने सरकार से इस मामले में आरोपी को सख्त से सख्त सजा दिए जाने की मांग की। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के बदलापुर में एक स्कूल के सफाईकर्मी ने दो छात्राओं के साथ यौन उत्पीड़न को लेकर तनाव बढ़ने के बाद इंटरनेट को बंद कर दिया गया था, जिसके बाद इसे बहाल कर दिया गया है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने कहा कि वह इस मामले की जांच के लिए बदलापुर एक टीम भेजेगा।

स्कूल के शौचालय में चार साल दो मासूम छात्राओं से सफाईकर्मी द्वारा यौन उत्पीड़न किए जाने के बाद हजारों प्रदर्शनकारियों ने मंगलवार को बदलापुर रेलवे स्टेशन पर हंगामा किया और जिससे कई ट्रेन प्रभावित हुई थीं बदलापुर स्टेशन पर, उग्र प्रदर्शनकारियों को पुलिस अधिकारियों के खिलाफ 'हाय-हाय' के नारे लगाते और यौन उत्पीड़न में कथित तौर पर संलिप्त सफाईकर्मी को फांसी देने की मांग करते देखा गया। इसके साथ स्कूल परिसर में धावा बोल दिया था। पुलिस ने रेल पटरियों पर मौजूद प्रदर्शनकारियों पर लाठियां भांजी, क्योंकि वह पुलिसकर्मियों पर पथराव कर रहे थे। आक्रोशित सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने बच्चियों के साथ यौन उत्पीड़न के खिलाफ अपनी नाराजगी जताते हुए स्कूल में तोड़फोड़ भी की थी। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि उन्होंने आईपीएस आरती सिंह की अध्यक्षता में एसआईटी गठित करने का आदेश दिया है। सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि स्कूल के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इस मामले की त्वरित अदालत में सुनवाई होगी और दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

साधनहीन विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां

अखिल भारतीय संस्था तरुण मित्र परिषद द्वारा साधनहीन और पित्रहीन विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रद्धा सदन, हस्तिनापुर मे आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रमोद जैन कागजी ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। परिषद के महासचिव अशोक जैन ने बताया कि अनीता जैन की स्मृति मे प्रमोद जैन कागजी परिवार के सहयोग से 9वें वार्षिक छात्रवृत्तियां वितरण कार्यक्रम में लगभग 40 साधनहीन व पित्रहीन विद्यार्थियों को रु.1000/- प्रति विद्यार्थी छात्रवृत्तियां व परिषद की संरक्षिका सुधा गुप्ता के सहयोग से रजिस्टर, कापियां, स्टेशनरी व स्कूल बैग वितरित किए गए। परिषद के सहसचिव आलोक जैन ने बताया कि तरुण मित्र परिषद द्वारा संचालित श्रद्धा सदन मे सामाजिक, पारिवारिक व धार्मिक गतिविधियां सुचारु रूप से आयोजित की जा रही हैं। इस अवसर पर प्रमोद जैन परिवार द्वारा सभी के लिए भोजन की व्यवस्था भी की गई। इस अवसर पर श्री आत्मानंद जैन इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अतुल बंसल पुनीत जैन, अंकित जैन, दीप्ति जैन व ईशू जैन भी उपस्थित थीं। मंच संचालन करते हुए श्री आत्मानंद जैन इंटर कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य महेन्द्र कुमार जैन ने बच्चों को सुसंस्कार ग्रहण करने की प्रेरणा दी ।

विश्व विश्वविद्यालयों की शंघाई अकादमिक रैंकिंग-2024 में वीआईटी भारत में दूसरा सर्वश्रेष्ठ संस्थान

॥ एन अरूण कुमार ॥

वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (VIT) को शंघाई अकादमिक रैंकिंग ऑफ वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज 2024 में भारत में दूसरा सर्वश्रेष्ठ संस्थान का दर्जा दिया गया है। हाल ही में जारी शंघाई अकादमिक रैंकिंग ऑफ वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज (ARWU) 2024 में वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी को भारत में दूसरा सर्वश्रेष्ठ संस्थान और भारत के निजी संस्थानों में नंबर एक का दर्जा दिया गया है। वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी को 2024 शंघाई रैंकिंग में विश्व विश्वविद्यालयों में 501 से 600 के बीच स्थान दिया गया है, जिसे शंघाई ARWU (विश्व विश्वविद्यालयों की अकादमिक रैंकिंग) के रूप में भी जाना जाता है। शंघाई ARWU अकादमिक और शोध प्रदर्शन संकेतकों के आधार पर विश्वविद्यालयों को रैंक करता है, जिसमें नोबेल पुरस्कार, फील्ड मेडल, उच्च उद्धृत शोधकर्ता, नेचर और साइंस पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्र, प्रमुख उद्धरण सूचकांकों में अनुक्रमित पत्र और किसी संस्थान का प्रति व्यक्ति शैक्षणिक प्रदर्शन जीतने वाले पूर्व छात्र और कर्मचारी शामिल हैं। शंघाई अकादमिक रैंकिंग ऑफ वर्ल्ड यूनिवर्सिटीज रैंकिंग में शोध

परिणामों की गुणवत्ता और मात्रा दोनों को ध्यान में रखा जाता है। शंघाई ARWU रैंकिंग ने इस साल दुनिया के 1,000 शीर्ष विश्वविद्यालयों की सूची प्रकाशित की है, जिसमें भारत के 15 विश्वविद्यालय शामिल हैं। भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बैंगलोर को वैश्विक स्तर पर 401-500 रैंक ब्रैकेट में सूचीबद्ध किया गया है, जबकि यह भारतीय विश्वविद्यालयों की सूची में सबसे ऊपर है और शंघाई अफ्हव रैंकिंग वेबसाइट के अनुसार वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी भारत में दूसरा सबसे अच्छा संस्थान है।

राजनीति से संन्यास नहीं लूंगा-रास्ते में कोई दोस्त मिला तो...

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

भाजपा में शामिल होने की अटकलों के बीच झारखंड के पूर्व सीएम और जेएमएम नेता चंपई सोरेन ने आज बड़े संकेत दिए हैं। चंपई सोरेन ने साफ तौर पर कहा कि मैं राजनीति से संन्यास नहीं लूंगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मैंने जो नया अध्याय शुरू किया है, उसमें नए संगठन को मजबूत करूंगा और अगर रास्ते में कोई अच्छा दोस्त मिला तो उस दोस्ती को आगे बढ़ाते हुए जनता और राज्य की सेवा करूंगा। उन्होंने कहा कि एक हफ्ते में सब कुछ साफ हो जाएगा।

इससे पहले चंपई सोरेन ने भाजपा में शामिल होने की खबरों को खारिज किया था। उन्होंने कहा था कि मेरी किसी से मुलाकात नहीं हुई। मैं यहां (दिल्ली) किसी निजी काम से आया था। मैं उनसे (भाजपा नेता से) मिलना नहीं चाहता था। भाजपा में शामिल होने की अटकलों पर उन्होंने कहा कि मैं

यह नहीं समझ पा रहा हूं कि यह सब कौन कह रहा है? झारखंड इकाई के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि चंपई सोरेन के भाजपा में शामिल होने की संभावनाओं को लेकर उनके साथ अभी कोई बातचीत नहीं हुई है। मरांडी ने कहा कि चंपई एक मंझे हुए नेता हैं और वह अपनी आगे की राह के बारे में निर्णय खुद लेंगे।

चंपई ने पोस्ट में बताया कि तीन जुलाई को पार्टी विधायकों की बैठक में उनसे इस्तीफा देने को कहा गया। उन्होंने कहा कि वह इस निर्देश से आहत थे, क्योंकि उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंची थी। पूर्व मुख्यमंत्री के अनुसार, उन्होंने बैठक में घोषणा की कि आज से मेरे जीवन का एक नया अध्याय शुरू होगा। उन्होंने कहा कि उनके पास तीन विकल्प हैं, पहला-राजनीति से संन्यास ले लें, दूसरा-एक नयी पार्टी बनाएं और तीसरा-कोई सहयोगी मिले तो उसका दामन थाम लें। चंपई ने कहा, उस दिन से लेकर अब तक और आगामी झारखंड विधानसभा चुनाव तक, इस यात्रा में मेरे लिए सभी विकल्प खुले हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने डॉक्टरों से काम पर लौटने की अपील की

कोलकाता बलात्कार-हत्या मामले में पश्चिम बंगाल पुलिस द्वारा अपनाई गई समयसीमा और प्रक्रियाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर चिंता जताई है। सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश डी. वाई. चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला ने घटनाओं के क्रम, खासकर मामले को अप्राकृतिक मौत के रूप में दर्ज करने में देरी और पोस्टमार्टम के समय पर सवाल उठाए। सुप्रीम कोर्ट ने स्थिति का राजनीतिकरण न करने का आग्रह किया और कहा कि कानून अपना काम कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वे डॉक्टरों के कल्याण और सुरक्षा के बारे में चिंतित हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया है कि वे यह सुनिश्चित करें कि राज्य चिकित्सा प्रतिष्ठानों में हिंसा की किसी भी आशंका को रोक सकें। इस बीच, सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया कि आरजी कर मेडिकल कॉलेज में सीआईएसएफ को तैनात किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने डॉक्टरों से काम पर लौटने की अपील की। सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया

एफआईआर 14 घंटे बाद क्यों?

कि विरोध प्रदर्शन करने वाले डॉक्टरों के खिलाफ कोई भी बलपूर्वक कदम न उठाया जाए और न ही कोई प्रतिकूल कार्रवाई की जाए।

सुप्रीम कोर्ट ने स्वास्थ्य मंत्रालय को एक पोर्टल खोलने का निर्देश दिया है, जहां हितधारक समिति के समक्ष अपने सुझाव प्रस्तुत कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन को बाधित न करने का निर्देश दिया और राज्य को आरजी कर घटना के खिलाफ शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने का निर्देश दिया। बलात्कार-हत्या मामले में उच्चतम न्यायालय ने पश्चिम बंगाल सरकार से सवाल किया कि घटना के संबंध में प्राथमिकी दर्ज करने में 14 घंटे की देरी का क्या कारण है?

उच्चतम न्यायालय ने पश्चिम बंगाल सरकार से सवाल किए कि आरजी कर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य के संपर्क में कौन था, उन्होंने प्राथमिकी दर्ज कराने में देरी क्यों की, इसका उद्देश्य क्या था। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय कार्यबल को चिकित्सकों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय प्रोटोकॉल तैयार करते समय सभी हितधारकों की बात सुनने का निर्देश दिया। सुप्रीम कोर्ट ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष का पॉलीग्राफ टेस्ट कराने के लिए सीबीआई कोर्ट को निर्देश दिए हैं।

आरजेडी को बड़ा झटका: श्याम रजक ने पार्टी से दिया इस्तीफा

बिहार की सियासत से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। पूर्व मंत्री और आरजेडी के वरिष्ठ नेता श्याम रजक ने पार्टी के महासचिव पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को चिट्ठी लिखकर अपना इस्तीफा भेजा है। इस खत में श्याम रजक ने अपना दर्द भी बयां किया है और पार्टी छोड़ने का कारण भी बताया है।

उन्होंने अपने इस्तीफे में शायराना अंदाज में लिखा, "मैं शतरंज का शौकीन नहीं था, इसलिए धोखा खा गया। आप मोहरे चल रहे थे, मैं रिश्तेदारी निभा रहा था।"

श्याम रजक ने इस्तीफा देने की जानकारी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए दी। उन्होंने एक्स पोस्ट में लिखा, "आज राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय महासचिव एवं दल के प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा।"

इसके साथ ही उन्होंने अपने

पोस्ट में लालू प्रसाद यादव, तेजस्वी यादव, मीसा भारती, राबड़ी देवी और जंगदानंद सिंह को भी टैग किया।

श्याम रजक ने आरजेडी प्रमुख लालू यादव को भेजे पत्र में लिखा, "मैं राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय महासचिव एवं दल की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे रहा हूं। मैं शतरंज का शौकिन नहीं था, इसलिए धोखा खा गया। आप मोहरे चल रहे थे, मैं रिश्तेदारी निभा रहा था।"

इससे पहले श्याम रजक ने नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) का साथ छोड़कर आरजेडी का दामन थमा था। मंत्री पद छोड़कर जेडीयू से इस्तीफा देने वाले श्याम रजक ने आरजेडी की सदस्यता ग्रहण की थी। उन्हें उम्मीद थी कि 2020 के विधानसभा चुनाव में आरजेडी फुलवारीशरीफ से टिकट देगी। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ।

2020 के चुनावी परिणाम के बाद श्याम रजक को उम्मीद थी कि उन्हें विधान परिषद का सदस्य बनाया जाएगा। उनकी यह उम्मीद भी टूट गई थी। आरजेडी ने मुन्नी रजक को विधान परिषद का सदस्य बना दिया था। खबरों के मुताबिक श्याम रजक एक बार फिर जेडीयू में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसकी अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

विनेश राजनीति में आ सकती है

पूरी दुनिया में बस महिला पहलवान विनेश फोगाट की चर्चा है। पेरिस ओलंपिक में अपनी वेट कैटेगरी से मात्र 100 ग्राम अधिक वजन के कारण वे बाहर हो गईं। खबर आ रही है कि दिग्गज पहलवान के आगामी हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ने की संभावना है। विनेश के करीबी सूत्रों ने इसकी जानकारी दी। विनेश ने पहले कहा था कि वे सक्रिय राजनीति में नहीं आएगी। लेकिन नई रिपोर्ट के अनुसार, कुछ राजनीतिक दल उन्हें मनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

पेरिस से लौटने के बाद सोनीपत स्थित उनके गांव बलाली में विनेश का जोरदार स्वागत किया गया। हालांकि, विनेश किस पार्टी में शामिल होंगी, इसकी पुष्टि अभी नहीं हुई है। फोगाट परिवार के करीबी सूत्रों ने बताया, हां, क्यों नहीं? संभावना है कि हरियाणा विधानसभा में विनेश बनाम बबीता फोगाट और बजरंग पुनिया बनाम योगेश्वर दत्त मुकाबला देखने को मिले। फोगाट परिवार के करीबी सूत्रों ने बताया, जैसे ही विनेश एयरपोर्ट से बाहर निकलीं। उनके प्रशंसकों, परिवार और दोस्तों ने उनका जोरदार स्वागत किया, जो सुबह के समय के बावजूद बड़ी संख्या में एकत्र हुए थे। जबरदस्त समर्थन और स्नेह ने कुश्ती आइकन को भावुक कर दिया। एयरपोर्ट के बाहर लोगों ने जश्न मनाया और उनकी भावनाएं चरम पर थीं। विनेश का स्वागत करने वालों में सबसे पहले साक्षी मलिक, जिन्होंने पिछले साल कुश्ती से संन्यास ले लिया था, और बजरंग पुनिया भी शामिल थे।

विनेश ने कहा था, हमारी लड़ाई खत्म नहीं हुई है और लड़ाई जारी रहेगी और मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि सच्चाई की जीत हो। विनेश ने ओलंपिक पोडियम पर चूकने पर अपना गहरा दुख व्यक्त किया, अपनी व्यक्तिगत निराशा को भारत में महिलाओं के अधिकारों के व्यापक संघर्ष से जोड़ा, एक ऐसा मुद्दा जिसे उन्होंने पूर्व कुश्ती महासंघ प्रमुख के खिलाफ अपने विरोध प्रदर्शन में आगे बढ़ाया था।

राहुल-खड़गे का जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देने का वादा

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित किया। नेताओं ने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत की और जम्मू-कश्मीर में आगामी विधानसभा चुनावों के लिए जमीनी स्तर की तैयारियों पर फीडबैक लिया, जो तीन चरणों में 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को होने वाले हैं।

राहुल ने कहा कि कांग्रेस पार्टी और इंडिया गठबंधन में भी हमारी प्राथमिकता है कि जम्मू-कश्मीर को जल्द से जल्द राज्य का दर्जा बहाल किया जाए। हमें उम्मीद थी कि चुनाव से पहले यह काम हो जाएगा, लेकिन चुनाव घोषित हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि यह एक कदम आगे है और हम उम्मीद कर रहे हैं कि जल्द से जल्द राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा और जम्मू-कश्मीर के लोगों के अधिकार, लोकतांत्रिक अधिकार उन्हें वापस मिलेंगे। आजादी के बाद यह पहली बार है कि कोई राज्य केंद्र शासित प्रदेश बना है।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। केंद्र शासित प्रदेश राज्य बन गए हैं, लेकिन यह पहली बार है कि राज्य केंद्र शासित प्रदेश बन गया है। इसलिए, हम अपने राष्ट्रीय घोषणापत्र में भी बहुत स्पष्ट हैं कि यह हमारी प्राथमिकता है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोगों को उनके लोकतांत्रिक अधिकार वापस मिलें। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोगों को मेरा संदेश है, हम आपकी हरसंभव मदद कर सकते हैं, कांग्रेस पार्टी हमेशा आपके साथ है। हम समझते हैं कि आप बहुत मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं, एक कठिन दौर, और हम हिंसा को खत्म करना चाहते हैं।

राज्यसभा एलओपी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में हम सबको मिलकर लड़ना चाहिए और विपक्ष को भी साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। आज वो (बीजेपी) परेशान हैं और इसीलिए आपने देखा होगा कि वो 2-3 बिल पास करना चाहते थे लेकिन विपक्ष के विरोध के कारण उन्हें वापस ले लिया या फिर उन्हें संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया। उन्होंने कहा कि जब सबने वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक का पुरजोर विरोध किया तो उसे संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया गया...हम जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देंगे।

हरीश रावत का उत्तराखंड की स्थायी राजधानी की मांग को लेकर गैरसैंण में उपवास

॥ जगन नेगी ॥

पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने उत्तराखंड की स्थायी राजधानी घोषित करने की मांग को लेकर यहां उपवास किया और दिन के उजाले में हाथ में मोमबत्ती लेकर उसे खोजते दिखाई दिए। अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत विधानसभा के मानसून सत्र के पहले दिन वरिष्ठ कांग्रेस नेता रावत अपने साथियों के साथ यहां पहुंचे और उपवास किया। बाद में उन्होंने जलती मोमबत्ती हाथ में लेकर परिक्रमा की और प्रदेश की स्थायी राजधानी खोजने की कोशिश की।

रावत के साथ सड़कों पर बड़ी संख्या में मौजूद लोग जुलूस की शक्ल में नारेबाजी करते हुए शहीद स्थल से निकले और गैरसैंण नगर के एक हिस्से की परिक्रमा करने के बाद वापस शहीद स्थल पर पहुंचे एवं सभा की। इस मौके पर उन्होंने सवाल पूछा कि गैरसैंण उत्तराखंड की ग्रीष्मकालीन राजधानी है और देहरादून अस्थायी राजधानी है तो प्रदेश की स्थायी राजधानी कहां है। वर्ष 2020 में तत्कालीन मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत के कार्यकाल में गैरसैंण को प्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया गया था। रावत ने कहा कि 2027 में कांग्रेस सत्ता में आएगी और तब गैरसैंण को स्थायी राजधानी बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि उन्होंने पहले स्पष्ट कर दिया था कि 2020 तक गैरसैंण में अवस्थापना सुविधाएं विकसित कर लेंगे और 2022 से पहले गैरसैंण में राजधानी ले आएंगे। उन्होंने कहा कि लेकिन इससे पहले एक षड्यंत्र के तहत में (सत्ता से) हटा दिया गया। उन्होंने लोगों से अगले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को जिताने और सत्ता में लाने की अपील की। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनते ही राजधानी गैरसैंण लायी जाएगी।

रेप विरोधी कड़े कानून के लिए केंद्र पर दबाव बनाए राज्य सरकारें

तृणमूल कांग्रेस के महासचिव और पार्टी के लोकसभा सदस्य अभिषेक बनर्जी ने सभी राज्य सरकारों से आह्वान किया कि वे देश में एक व्यापक बलात्कार विरोधी कानून बनाने के लिए केंद्र पर दबाव डालें।

बनर्जी ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर जारी एक बयान में कहा, "राज्य सरकारों को कार्रवाई करनी चाहिए और केंद्र पर तत्काल एक व्यापक बलात्कार विरोधी कानून के लिए दबाव डालना चाहिए जो जल्द से जल्द और सख्त न्याय सुनिश्चित करता हो।"

उनके अनुसार, देश को मजबूत कानून की जरूरत है, जो 50 दिनों के भीतर मुकदमे और सजा की प्रक्रिया को पूरा कर सके। अपने बयान में उन्होंने यह भी बताया कि पिछले 10 दिनों के दौरान पूरा देश आरजी कर अस्पताल में एक महिला जूनियर डॉक्टर के साथ हुए जघन्य बलात्कार और हत्या पर विरोध प्रदर्शन कर रहा है।

इस महीने की शुरूआत में कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में इसी अवधि के दौरान देश के विभिन्न हिस्सों से 900 बलात्कार की घटनाएं दर्ज की गई हैं।

उन्होंने अपने बयान में आगे कहा, अफसोस की बात है कि एक स्थायी समाधान अभी भी काफी हद तक चर्चा में नहीं है। प्रतिदिन 90 बलात्कार, हर घंटे 4 और हर 15 मिनट में 1 बलात्कार की रिपोर्ट के साथ - एक निर्णायक कार्रवाई अत्यंत जरूरी है।' इससे पहले 9 अगस्त की सुबह अस्पताल परिसर से महिला डॉक्टर का शव बरामद होने के बाद बनर्जी ने ऐसे क्रूर बलात्कार और हत्या के मामले में दोषियों के साथ मुठभेड़ सहित कड़ी से कड़ी सजा की मांग की। उन्होंने एक बयान जारी कर पुलिस से यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि हिंसा के लिए जिम्मेदार प्रत्येक व्यक्ति की पहचान की जाए, उसे जवाबदेह ठहराया जाए और अगले 24 घंटों के भीतर कानून का सामना किया जाए, चाहे उनकी राजनीतिक स्थिति कुछ भी हो।

हरियाणा में भर्तियों के रिजल्ट घोषित करने पर रोक
कांग्रेस की शिकायत के बाद चुनाव आयोग का एक्शन

चुनाव आयोग ने हरियाणा में चल रही भर्ती प्रक्रिया के परिणाम जारी करने पर राज्य में विधानसभा चुनाव संपन्न होने तक रोक लगा दी। कांग्रेस सांसद जयराम रमेश की शिकायत के बाद यह कदम उठाया गया है।

रमेश ने हरियाणा पुलिस में कांस्टेबल के 5600 पदों, हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (एचएसएससी) द्वारा टीजीटी और पीटीआई के 76 पदों और हरियाणा लोक सेवा आयोग (एचपीएससी) द्वारा विभिन्न पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया है।

आयोग ने राज्य सरकार से विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। सरकार से तथ्यों की पुष्टि करने के बाद आयोग ने पाया कि मौजूदा एमसीसी निर्देशों के अनुसार एचएसएससी और एसपीएससी द्वारा चल रही भर्ती प्रक्रिया में कोई उल्लंघन नहीं हुआ है। आयोग ने पाया है कि भर्ती प्रक्रिया चुनाव की तारीखों की घोषणा से पहले शुरू की गई थी, इसलिए यह मौजूदा एमसीसी निर्देशों के भीतर थी।

इसने पाया कि वैधानिक अधिकारी अपना काम जारी रख सकते हैं। हालांकि, समान अवसर बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि किसी को कोई अनुचित लाभ न मिले, आयोग ने निर्देश दिया है कि संबंधित प्राधिकारियों (एचएसएससी और एचपीएससी) द्वारा इन भर्तियों के परिणामों की घोषणा राज्य में विधानसभा चुनाव समाप्त होने तक जारी नहीं की जाएगी।

हरियाणा में 1 अक्टूबर को मतदान होगा और परिणाम 4 अक्टूबर तक घोषित किए जाएंगे। राज्य में वर्तमान में भाजपा की सरकार है और नायब सिंह सैनी इसके मुख्यमंत्री हैं। 90 सीटों वाली विधानसभा में 40 सीटों के साथ भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी।

46 के बहुमत के आंकड़े को पार करने में असमर्थ, इसने जननायक जनता पार्टी, जिसने 10 सीटें जीती थीं, और निर्दलीय उम्मीदवारों के साथ चुनाव बाद गठबंधन किया। यह गठबंधन मार्च 2024 तक ही चला, लेकिन विश्वास मत के बाद भाजपा सत्ता में बनी रही।

वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट ने किया बागपत के सांसद को सम्मानित

॥ विवेक जैन ॥

वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट बागपत द्वारा बागपत शहर के वात्सायन पैलेस में एक भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सम्मान समारोह में वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने बागपत के सांसद डाक्टर राजकुमार सांगवान को फूलमाला व पटका पहनाकर, चादर औढाकर, पगड़ी पहनाकर व मूमेंटो भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट द्वारा डॉ राजकुमार सांगवान को एक ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में सभी वरिष्ठ नागरिकों का आयुष्मान योजना के अन्तर्गत मुफ्त इलाज करवाने, अग्रवाल मण्डी टटीरी में बनने वाले फ्लाई ओवर का काम शीघ्र से शीघ्र पूरा करवाने, जिला अस्पताल बागपत में एमआरआई के विशेषज्ञों तथा हड्डी रोग विशेषज्ञों की नियुक्ति कराने, बागपत-मुरादनगर मार्ग पर बागपत से ललियाना गांव तक नियमित दैनिक बस चलवाये जाने, बागपत नगर के सामने यमुना नदी पर पुल बनवाये जाने, पृथ्वीराज चौहान डिग्री कालिज बागपत के निकट से पुराना कस्बा जाने वाले मार्ग पर अवैध कब्जा हटवाये जाने आदि की मांग की गयी। डॉ राजकुमार सांगवान ने सम्मानित किये जाने पर वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट बागपत का आभार व्यक्त किया और कहा कि लोगों ने मुझको जो जिम्मेदारी सौंपी है, मैं उस जिम्मेदारी को पूरी लग्न के साथ निभाऊंगा और लोगों की आशाओं और अपेक्षाओं पर खरा उतरूंगा। जनता से किये हर वादों को पूरा करूंगा। इस अवसर पर वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा एक से बढ़कर एक गाने प्रस्तुत किये गये। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मास्टर राकेश मोहन गर्ग द्वारा किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ नागरिक कल्याण ट्रस्ट के संरक्षक राजपाल शर्मा व बशीर खान, अध्यक्ष महासिंह चौहान, महासचिव महेन्द्र सिंह धामा, कोषाध्यक्ष राकेश मोहन गर्ग, राधेश्याम शर्मा, राजेन्द्र शर्मा, हरिमोहन शर्मा, जयप्रकाश धामा, वेदप्रकाश भारद्वाज, ब्रजमोहन गौतम, गजेन्द्र सिंह बली, राजेन्द्र प्रसाद, राजेश्वर तोमर, शीशपाल आर्य, डॉ सुरेश चन्द कौशिक, ब्रहमपाल रूहेला सहित सैंकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

शंभू बॉर्डर अभी नहीं खुलेगा: पंजाब-हरियाणा से सुप्रीम कोर्ट का किसानों से बातचीत का निर्देश

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब और हरियाणा दोनों राज्य सरकारों से शंभू सीमा पर राजमार्ग खाली करने के लिए आंदोलनकारी किसानों को मनाने के लिए कहा, क्योंकि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और अन्य मुद्दों पर किसानों की चिंताओं को हल करने के लिए विशेषज्ञ समिति के गठन पर फैसला 2 सितंबर तक के लिए टाल दिया गया।

फोटो : राजीव गुप्ता

न्यायमूर्ति सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने दोनों राज्यों को कृषि से संबंधित स्वतंत्र व्यक्तियों को शामिल करने वाली विशेषज्ञ समिति के लिए प्रस्तावित संदर्भ शर्तों का सुझाव देने की भी अनुमति दी।

न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और उज्जल भुइयां की पीठ ने कहा कि समिति की संरचना और उनके द्वारा हल किए जाने वाले मुद्दों पर, हमने अपना होमवर्क कर लिया है। हम ऐसा करेंगे. लेकिन हम दोनों राज्यों से अनुरोध करते हैं कि वे किसानों को आश्वस्त करें कि चूंकि अब अदालत उनकी शिकायतों तक पहुंचने के लिए एक मंच बनाने पर विचार कर रही है, इसलिए इस मुद्दे को केवल कानून के अनुसार ही हल किया जा सकता है। पंजाब के महाधिवक्ता गुरमिंदर सिंह ने अदालत को सूचित किया कि राज्य के अधिकारियों ने इस सप्ताह की शुरूआत में किसान यूनियनों के साथ एक बैठक की और यातायात की आंशिक आवाजाही के लिए अंबाला-नई दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग को साफ करने की संभावना का पता लगाया, जैसा कि शीर्ष अदालत ने 12 अगस्त को सुझाव दिया था।

सिंह ने आगे कहा कि राज्य उन्हें उन वाहनों पर आगे बढ़ने की अनुमति देने के लिए भी तैयार है जो मोटर वाहन अधिनियम (एमवी अधिनियम) के अनुसार अनुमत हैं। पीठ ने पंजाब एजी से कहा कि आपको उन्हें राजमार्ग खाली करने और अपने ट्रैक्टर और ट्रॉलियां हटाने के लिए मनाना चाहिए। सिंह ने कहा कि विचार-विमर्श अभी भी चल रहा है, और किसान यूनियनों ने राज्य के सुझाव पर वापस आने के लिए समय मांगा है।

केजरीवाल की तस्वीर के बिना अखबारों में विज्ञापन
आतिशी ने अधिकारियों को जारी किया नोटिस

राष्ट्रीय राजधानी में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) और नौकरशाही के बीच ताजा टकराव में, दिल्ली की मंत्री आतिशी ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की तस्वीर के बिना एक अखबार में विज्ञापन जारी करने के लिए सूचना एवं प्रचार विभाग के सचिव और निदेशक को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। जारी नोटिस में आतिशी ने अधिकारियों से तीन दिनों के भीतर यह बताने को कहा कि विज्ञापन की लागत उनके वेतन से क्यों न वसूल की जाए, क्योंकि यह विज्ञापन प्रभारी मंत्री की मंजूरी के बिना प्रकाशित किया गया था।

अखबारों में प्रकाशित इस विज्ञापन में केजरीवाल की तस्वीर नहीं थी और यह दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित आकार से भी छोटा था। 14 अगस्त को आतिशी ने विभाग को पिछले साल की तरह पूरे पेज का विज्ञापन देने का निर्देश दिया और केजरीवाल की तस्वीर वाली रचनात्मक योजना को मंजूरी दे दी। उन्होंने कहा कि केजरीवाल दिल्ली की लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार के मुखिया हैं और उनकी तस्वीर लोकतंत्र और स्वतंत्रता के मूल्यों का प्रतीक है।

यह नोटिस तब आया जब स्वतंत्रता दिवस पर अखबारों में पूरे पन्ने के विज्ञापन में केजरीवाल की तस्वीर छापने के आतिशी के प्रस्ताव को सूचना एवं प्रचार निदेशालय (डीआईपी) के सचिव ने सीएम की स्थिति को विचाराधीन कैदी बताते हुए खारिज कर दिया। 14 अगस्त को एक नोट में, डीआईपी ने मुख्यमंत्री की तस्वीर को ले जाने पर आपत्ति जताई क्योंकि स्वतंत्रता दिवस किसी अन्य त्यौहार की तरह नहीं है, यह किसी व्यक्ति को दिखाने का कार्यक्रम नहीं है, "विशेष रूप से अभूतपूर्व परिस्थितियों में जब विचाराधीन व्यक्ति एक विचाराधीन कैदी है, जो कानून की उचित प्रक्रिया के अनुसार न्यायिक हिरासत में है।"

मुख्यमंत्री केजरीवाल वर्तमान में आबकारी नीति मामले के सिलसिले में 21 मार्च को गिरफ्तारी के बाद से न्यायिक हिरासत में हैं। 15 अगस्त को

जिताऊ उम्मीदवार को बिना सिफारिश के भी मिल जाएगा टिकट

कांग्रेस पार्टी अब टिकट बंटबारे को लेकर अपनी रणनीति बदलती नजर आ रही है। अब केवल किसी बड़े नेता की सिफारिश से टिकट नहीं मिलेगा। केवल जिताऊ उम्मीदवार को ही टिकट दिया जाएगा। ये बात हरियाणा-जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनावों में टिकट बंटबारे को लेकर राहुल गांधी ने छोटे-बड़े नेताओं को लेकर शर्तें साफ कर दी हैं। देश में जल्द ही होने जा रहे हरियाणा और जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव को लेकर गहमागहमी तेज है और टिकट बंटवारे को लेकर पार्टियों में उठापटक भी। कांग्रेस की स्क्रीनिंग कमेटी में इससे जुड़े कई बड़े फैसले लिए। इन राज्यों में टिकटों के बंटवारे को लेकर राहुल गांधी ने सख्त रुख अपनाया है।

राहुल गांधी ने ये भी साफ कर दिया कि किसी नेता के बड़े होने भर से उसे टिकट नहीं मिल जाएगा। उन्होंने कहा कि पार्टी का नेता बड़ा है और जीत सकता है लेकिन अगर उसके ऊपर भ्रष्टाचार, गंभीर मुकदमे, महिला या दलित के खिलाफ गंभीर अपराध की श्रेणी में मुकदमा दर्ज है तो उसको टिकट नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने कहा, पार्टी भी सर्वे करवा रही है इसलिए आपकी छानबीन से आए नाम और सर्वे के नाम का मिलान भी हम करेंगे। राहुल गांधी ने कहा कि कितना भी बड़ा नेता हो सिर्फ उनकी सिफारिश के आधार पर टिकट नहीं देना है बल्कि मजबूत पार्टी कार्यकर्ता को टिकट देना है भले ही उसका नाम कोई बड़ा नेता न ले। उन्होंने कहा कि बाहर से आए नेता को सिर्फ इस आधार पर टिकट नहीं देना है कि वो जीत सकता है और उसके पास संसाधन हैं, पार्टी के नेता की अगर जीतने की संभावना है तो प्राथमिकता उसको ही देनी है।

कांग्रेस सरकार बनी तो हमारे दिल्ली वाले 6 माह टिकने नहीं देंगे

॥ राष्ट्र टाइम्स ॥

हरियाणा भाजपा के वरिष्ठ नेता और वित्त मंत्री जेपी दलाल ने एक ऐसा बयान दिया है जिससे राज्य में सियासी बवाल शुरू हो गया है। अपने बयान में उन्होंने कहा कि अगर किसी तरह से हरियाणा में कांग्रेस पार्टी सरकार बनाने में कामयाब हो जाती है, तो दिल्ली में उनकी पार्टी (भाजपा) की सरकार सुनिश्चित करेगी कि कोई भी विपक्षी सरकार छह महीने से अधिक न चले। दलाल ने यह बात भिवानी जिले में विधानसभा चुनाव से पहले एक जनसभा को संबोधित करते हुए कही।

हरियाणवी बोली में जनसभा को संबोधित करते हुए दलाल ने कहा कि कुछ लोग कह रहे हैं कि हरियाणा में कांग्रेस सरकार बनाएगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं होगा। सबसे खराब स्थिति में भी... दिल्ली में हमारे नेता उन्हें छह महीने से अधिक सत्ता में नहीं रहने देंगे। दलाल के भाषण का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। दलाल के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए हरियाणा में कांग्रेस मामलों के प्रभारी दीपक बाबरिया ने कहा कि उनके बयान ने भाजपा की साजिश को उजागर कर दिया है।

उन्होंने कहा कि दलाल संविधान का मजाक उड़ा रहे हैं और भाजपा को उनसे पद छोड़ने के लिए कहना चाहिए। यह पहली बार नहीं है कि दलाल ने अपने बयानों से विवाद खड़ा किया हो और अपनी पार्टी को मुश्किल में डाला हो। नवंबर 2023 में दलाल ने अब निरस्त किए गए तीन कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन करने वालों को "सामाजिक रूप से बहिष्कृत व्यक्ति..." कहा था। इससे पहले दिसंबर 2020 में किसान आंदोलन के दौरान, उन्होंने यह कहकर विवाद खड़ा कर दिया था कि देश को अस्थिर करने के लिए किसान आंदोलन के पीछे चीन, पाकिस्तान और अन्य "दुश्मन" देशों सहित विदेशी ताकतें हैं। फरवरी 2021 में, दलाल ने किसान आंदोलन के दौरान कई किसानों की मौतों के बारे में मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए टिप्पणी की, "क्या वे घर पर होते तो नहीं मरते?" इसी तरह की बात जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि 1-2 लाख लोगों में से, क्या छह महीने में 200 लोग नहीं मरते? आलोचनाओं का सामना करते हुए, उन्होंने बाद में अपनी टिप्पणी पर खेद व्यक्त किया।

एनडीए सरकार का यू टर्न: लेटरल एंट्री योजना स्थगित

॥ प्रदीप शर्मा ॥

अब इसे गठबंधन सरकार की मजबूरी समझें या फिर विपक्ष का दबाव कि विवाद के बाद केंद्र सरकार ने लेटरल एंट्री के तहत नियुक्ति प्रक्रिया को रद्द कर दिया है। दरअसल, निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों को शीर्ष सरकारी पदों पर लाने हेतु यह योजना बनी थी। बीते सालों में नौकरशाही में विशेषज्ञों को शामिल करने के कदम को प्रगतिशील सोच कहा गया। लेकिन चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी के चलते विरोध के स्वर मुखर हुए। विपक्षी दलों की तीखी आलोचना और राजग के कुछ सहयोगियों की चिंता के बाद सरकार ने योजना को स्थगित कर दिया। निश्चित रूप से शासकीय व्यवस्था में बड़े फैसले गंभीर परामर्श व सहयोग की मांग करते हैं। सत्ता के दंभ से इतर दूरगामी परिणाम वाली नीतियों को आगे बढ़ाने हेतु सभी हितधारकों से व्यापक बातचीत जरूरी होती है। दूसरे शब्दों में सरकार को अपनी इच्छा थोपने के बजाय गठबंधन राजनीति की जटिलताओं के मद्देनजर विपक्ष से सामंजस्य के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

बहरहाल, यह तय है कि पिछले दो कार्यकाल में स्वच्छंद शासन करने वाली मोदी सरकार फिलहाल गठबंधन की मजबूरी के साथ विपक्षी दबाव को भी महसूस कर रही है। पिछले दो सप्ताह में राजग सरकार ने विवाद के बाद न केवल वक्फ विधेयक पर निर्णय बदला बल्कि प्रसारण विधेयक को समीक्षा के लिये एक संसदीय पैनल के पास भेजा है। इसके बाद अब लेटरल एंट्री के फैसले पर यू टर्न ने यह निष्कर्ष भी दिया है कि राजग सरकार पर्याप्त बहुमत न होने पर अब गठबंधन की राजनीति की सीमाओं को स्वीकार करने लगी है। एक हकीकत यह भी है कि मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस व इंडिया गठबंधन के सदस्य अभी भी तल्ख चुनावी तेवरों में नजर आ रहे हैं। खासकर ऐसे वक्त में जब हरियाणा व जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा हो चुकी है और इसी साल महाराष्ट्र व झारखंड में भी चुनाव होने हैं।

केंद्र सरकार ने वक्फ विधेयक व प्रसारण विधेयक के बाद अब लेटरल एंट्री मामले में से हाथ खींचकर यह संकेत देने का प्रयास किया है कि वह टकराव के बजाय बीच का रास्ता अपनाना चाहती है। उसने सतर्क रुख ही अपनाया है। कहा जाता रहा है कि लेटरल एंट्री प्रक्रिया हमारे संविधान में निहित समानता और न्याय के आदर्शों पर केंद्रित होनी चाहिए। इन भर्तियों में आरक्षण के प्रावधान न होने के मुद्दे का कांग्रेस, बसपा, सपा व राजद ने जोरदार तरीके से विरोध किया। उनकी दलील थी कि इस प्रक्रिया में सामाजिक न्याय की अवधारणा की अनदेखी की गई है। दरअसल, 17 अगस्त को यूपीएससी द्वारा 24 केंद्रीय मंत्रालयों में सेक्रेटरी, डायरेक्टर व डिप्टी सेक्रेटरी जैसे पदों के लिये निकाले गए विज्ञापन के कुछ घंटों के बाद विपक्ष ने तीखे तेवर दिखाने शुरू कर दिये थे। यहां तक कि राजग गठबंधन में शामिल एलजेपी ने भी इस फैसले को लेकर चिंता जतायी थी। विपक्षी दलों की दलील थी कि आरक्षण का प्रावधान न होने से वंचित समाज के हकों की रक्षा नहीं हो सकेगी। वहीं सरकार की दलील है कि लेटरल एंट्री का विचार कांग्रेस सरकार के दौरान 2005 में गठित प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशों के बाद सामने आया था और यूआईडीएआई के प्रमुख समेत कई पदों पर विशेषज्ञों की सीधी भर्ती में आरक्षण प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया था। दरअसल, मोदी सरकार में लेटरल एंट्री की प्रक्रिया वर्ष 2018 में आरंभ हुई थी, जब सीधी भर्तियों के लिये विज्ञापन दिए गए थे। ये नियुक्तियां अनुबंध पर तीन से पांच साल के लिये की गईं। लेकिन नियुक्तियों की संख्या कम होने के कारण विवाद नहीं उठा था। इन पदों के लिये राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों, शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा निजी क्षेत्र में इस पद से जुड़ा अनुभव रखने वाले लोग आवेदन कर सकते हैं। तर्क दिया गया कि ये नियुक्तियां डेप्यूटेशन जैसी हैं, जिसमें आरक्षण अनिवार्य नहीं है। बहरहाल, इस मुद्दे के विरोध के राजनीतिक निहितार्थ भी हैं, राजग सरकार ने भी आरक्षण विरोधी छवि बनने की आशंका के बीच इस फैसले से हाथ खींचा है। बहरहाल, प्रशासनिक व्यवस्था में विषय विशेषज्ञों का जुड़ना अच्छी बात है लेकिन इस प्रक्रिया में अधिकतम पारदर्शिता की जरूरत है।

भगवान श्री कृष्ण का नाम दामोदर क्यों पड़ा

श्री कृष्ण की लीलाओं की भांति उनके नाम भी अनंत हैं। उनमें से ही एक नाम ‘दामोदर’ है जो उन्हें बचपन में दिखाई गयी एक लीला के कारण मिला था। ये नाम इसीलिए भी विशिष्ट है क्यूंकि इस बार उन्होंने अपनी माया का प्रयोग असुर पर नहीं अपितु अपनी माता पर ही किया था।

एक बार गोकुल में माता यशोदा दूध को मथ कर माखन निकाल रही थी। उसी समय श्रीकृष्ण वहां आये और दूध पीने की जिद करने लगे। उनका मनोहर मुख देखकर वैसे ही माता यशोदा सब कुछ भूल जाती थी। उन्होंने सारा काम छोड़ा और श्रीकृष्ण को स्तनपान करने लगी। वो ये भूल गयी कि उन्होंने अंगीठी पर दूध गर्म करने रखा है।

दूध पिलाते हुए अचानक उन्हें याद आया कि अंगीठी पर रखा दूध तो उबल गया होगा। ये सोचकर उन्होंने श्रीकृष्ण को वही छोड़ा और दौड़कर रसोई में गयी। उधर श्रीकृष्ण बड़े क्रोधित हुए। माता और पुत्र के मध्य किसी का भी आना उनसे सहन नहीं हुआ। उसी क्रोध में उन्होंने वहां पड़े माखन के सारे घड़ों को फोड़ दिया और प्रेमपूर्वक माखन खाने लगे।

उधर जब यशोदा मैया वापस आयी तो देखा कि सारा घर माखन से भरा हुआ है। जहाँ देखो वही माखन गिरा हुआ दिखाई देता था। अब क्रोधित होने की बारी यशोदा मैया की थी। उन्होंने सारा दिन श्रम कर उस माखन को निकाला था और श्रीकृष्ण ने उनकी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया, ये सोच कर उन्हें भी बड़ा क्रोध आया।

फिर क्या था। उन्होंने एक छड़ी उठाई और श्रीकृष्ण को मारने दौड़ी। तीनों लोकों के स्वामी श्रीकृष्ण उनसे बचने के लिए भागे। सभी देवता स्वर्ग में उनकी इस लीला के दर्शन कर रहे थे। माता बड़ी थी और श्रीकृष्ण छोटे, फिर भी वे उन्हें पकड़ नहीं पायी। भला प्रभु की इच्छा के बिना उन्हें कौन पकड़ सका है? अंत में वे थक कर वही भूमि पर बैठ गयी।

जब श्रीकृष्ण ने देखा कि लीला कुछ अधिक ही हो गयी है और माता थक चुकी है तो वे स्वयं उनके पास पहुंचे। उन्होंने प्रेम पूर्वक मैया का पसीना पोंछा। किन्तु इतना श्रम करने के कारण यशोदा का क्रोध और बढ़ गया था। उन्होंने झट से कन्हैया को पकड़ लिया। इसे प्रभु की ही लीला कहेंगे कि उन्होंने समझा कि मैंने कान्हा को पकड़ लिया। वे क्या जानती थी कि उनकी इच्छा के बिना उन्हें कोई पकड़ नहीं सका है।

अब उन्हें दंड क्या दें? उन्होंने सोचा कि कृष्ण को इस ओखली से बांध कर घर का सारा काम निपटा लें। पर श्रीकृष्ण को भला कोई बांध सका है? उनकी एक और लीला आरम्भ हुई। यशोदा ने एक रस्सी उठाई और जब उससे श्रीकृष्ण को बांधना चाहा तो वो रस्सी उनके पेट से दो अंगुल छोटी पड़ गयी।

उन्होंने दूसरी रस्सी पहली रस्सी के साथ जोड़ी लेकिन रस्सी फिर दो अंगुल छोटी पड़ गयी। अब तो यशोदा ने एक के बाद एक रस्सी जोड़ना आरम्भ किया किन्तु हर बार रस्सी दो अंगुल कम ही पड़ती रही। मैया खीजती रही और श्रीकृष्ण हँसते रहे। उनकी ये लीला इसी प्रकार बहुत देर तक चलती रही।

श्रीकृष्ण को ना बंधना था, ना वे बंधे। अंत में यशोदा पुनः थक कर चूर हो गयी किन्तु श्रीकृष्ण के लिए रस्सी दो अंगुल छोटी ही रही। अब तो कान्हा ने देखा कि मैया थक गयी हैं। उनका वात्सल्य जागा और उन्होंने अंततः स्वयं ही स्वयं को बांध लिया। यशोदा ने चैन की साँस ली और घर के काम में लग गयी।

श्रीकृष्ण ने सोचा कि माता अपने कर्तव्यपालन में व्यस्त है तो मैं स्वयं के कर्तव्य का वहन कर लूँ। वे ओखली को घसीटते हुए आंगन में पहुंचे। वहां अर्जुन के दो विशाल पेड़ लगे हुए थे जो वास्तव में नलकुबेर एवं मणिग्रीव नामक दो गन्धर्व थे जो नारद जी के श्राप के कारण वृक्ष बन गए थे। नारद जी ने कहा था कि जब श्रीकृष्ण अवतार होगा तो वे ही उनका उद्धार करेंगे।

अंततः उनके उद्धार की बारी आयी। श्रीकृष्ण घुटने के बल चलते हुए दोनों वृक्ष के बीच से निकल गए पर ओखली फंस गयी। कन्हैया ने आगे बढ़ने के लिए थोड़ा जोर लगाया और दोनों वृक्ष जड़ सहित उखड कर नीचे आ गिरे। इससे नलकुबेर और मणिग्रीव श्रापमुक्त हो उनके समक्ष करवद्ध खड़े हो गए। श्रीकृष्ण ने उन्हें आशीर्वाद दिया और वे अपने धाम पधारे।

उधर वृक्षों के गिरने से धरती डोल उठी थी। माता यशोदा किसी अनिष्ट की आशंका से दौड़ती हुई आंगन में तो देखती है कि दोनों वृक्ष गिरे पड़े हैं और कन्हैया उनके बीच खेल रहे हैं। उनकी जान में जान आई। वे दौड़ती हुई गयी और तत्काल कन्हैया की रस्सी को खोलकर उन्हें मुक्त किया। श्रीकृष्ण की एक और लीला का अंत हुआ।

संस्कृत में रस्सी को ‘दाम’ और पेट को ‘उदर’ कहते हैं। इसी कारण रस्सी से पेट द्वारा बंधे होने के कारण श्रीकृष्ण का एक नाम ‘दामोदर’ पड़ गया।

इसी विषय में एक और कथा हमें भविष्य पुराण में मिलती है। एक बार राधा जी उद्यान में बैठी श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा कर रही थी। श्रीकृष्ण को आने में बड़ा विलम्ब हो गया जिससे राधा की व्यग्रता बहुत बढ़ गयी। खैर बहुत देर के बाद श्रीकृष्ण आये। राधा क्रोध में बैठी ही थी। कही श्रीकृष्ण शीघ्र ना चले जाएँ, ये सोचकर उन्होंने उन्हें लताओं की रस्सी से बांध दिया।

बांधने के बाद उन्होंने उनसे विलम्ब का कारण पूछा। तब श्रीकृष्ण ने बताया कि आज कार्तिक पर्व के कारण यशोदा मैया ने उन्हें बिना पूजा के आने नहीं दिया, इसी कारण उन्हें विलम्ब हो गया। ये सुनकर राधा जी को बड़ा पश्चाताप हुआ। उन्होंने तत्काल उनकी रस्सी खोली और उनसे क्षमा याचना की।

तब श्रीकृष्ण ने हँसते हुए कहा कि ‘क्षमा याचना कैसी? मैं तो पहले ही तुम्हारे प्रेम से बंधा हुआ हूँ।’ उनकी ये बात सुनकर राधा जी बड़ी प्रसन्न हुई और रस्सी (दाम) द्वारा पेट (उदर) से बांधने के कारण उन्होंने श्रीकृष्ण को ‘दामोदर’ नाम से सम्बोधित किया। तभी से श्रीकृष्ण का एक नाम दामोदर पड़ा।

संकलन: ज्योति राठौर

राशिफल साप्ताहिक

25 से 31 अगस्त 2024

मेष: जो लोग कानूनी विवादों में फंसे हुए हैं उनके लिए यह सप्ताह कुछ कठिन रहने के आसार हैं। कुछ विलंब होता हुआ भी देखा जा सकता है जिसके बाद प्रगति होने की संभावना है। इसलिए, आपको उन क्षणों के दौरान आराम से रहने की जरूरत है जब चीजें आपके पक्ष में नहीं हैं। ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए आप पेशेवर विशेषज्ञों से भी सलाह ले सकते हैं।

वृषभ: इस सप्ताह आप जो कुछ भी करें, सुनिश्चित करें कि आप जल्दबाजी और त्वरित निर्णय न लें। बल्कि कोई भी कदम उठाने से पहले कई बार सोच विचार करें। अन्यथा, चीजें उन मुद्दों को जन्म दे सकती हैं जिनकी आप सराहना नहीं करेंगे। घरेलू मोर्चे पर आप बिना किसी चुनौती के एक समृद्ध और सुखी जीवन का आनंद लेना जारी रखेंगे।

मिथुन: यह समय है कि आपको घरेलू और पेशेवर दोनों मोर्चों पर उड़ान भरनी चाहिए क्योंकि इस सप्ताह हर गुजरते दिन के साथ आपका आत्मविश्वास बढ़ता ही जा रहा है। यह सुनिश्चित करते हुए अपने लाभ के लिए इसका उपयोग करें कि आप उनसे लाभान्वित हों। दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश न करें बल्कि अपनी जीवनशैली में सुधार लाने पर ध्यान दें।

कर्क: लंबे समय के बाद आप अपने पुराने दोस्तों से घिरे रहेंगे जो आपके लिए सुकून भरा और मनोरंजक पल होगा। हर चीज से ब्रेक लें और क्वालिटी टाइम बिताना सुनिश्चित करें। पेशेवर कर्तव्य इस सप्ताह आपके धैर्य और कौशल की परीक्षा ले सकते हैं।

सिंह: इस सप्ताह आप जरूरतमंद लोगों की मदद करेंगे। आपके सामाजिक और सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव से आपको कई लोगों का आशीर्वाद मिलेगा, जो आपको भीतर से शांति प्रदान करेगा। साथ ही, इस सप्ताह आप खुद को अतिरिक्त भावुक महसूस करेंगे, जिससे आप अपने परिवार के सदस्यों और साथी के साथ बेहतरीन तरीके से जुड़ पाएंगे।

कन्या: आपको वास्तव में ज्यादा चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस सप्ताह आप कई स्तरों पर सहज और खुश महसूस करेंगे। आप महसूस करेंगे कि आपके पास निर्णय लेने के लिए पर्याप्त समय है जिसके परिणामस्वरूप सकारात्मक समाचार मिलेंगे जिससे आपका मनोबल और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

तुला: अगर आप अपने जीवन में बदलाव लाना चाहते हैं तो आपको वास्तव में अपने आत्मविश्वास के स्तर पर काम करने की जरूरत है। इस सप्ताह आप अपनी विरोधी इच्छाओं और जिम्मेदारियों के बीच संघर्ष होते हुए देख सकते हैं। यदि आप असमंजस में हैं तो परिवार के किसी अनुभवी सदस्य की सलाह लेकर आपकी समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक: आपके सितारों और ग्रहों की स्थिति के कारण, आप इस पूरे सप्ताह के लिए भाग्यशाली रहेंगे। आप जो भी निर्णय लेंगे वह आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि आपको अपने निर्णय लेने में लापरवाही बरतनी चाहिए। अन्यथा, मौद्रिक हानि और चिंता निश्चित रूप से पूर्व निर्धारित है।

धनु: इस पूरे सप्ताह के लिए, आप अतीत में किए गए अपने फैसलों के कारण खुश और आनंदित रहेंगे। आपका जीवन हो रहा होगा और दिलचस्प होगा जहां आपके जीवन का हर राग सही जगह पर होगा। यह समय है कि आपको अपनी आत्मा को संतुष्ट करने और अपने मन को शांत करने के लिए दूसरों के प्रति अधिक उदार होना चाहिए।

मकर: आपके पार्टनर और जीवनसाथी इस सप्ताह आपसे कुछ साझा करना चाह सकते हैं लेकिन कोई चीज उन्हें रोक रही है। उनके आदर्श साथी बनें और यह जानने की कोशिश करें कि उन्हें क्या परेशान कर रहा है। उनके साथ बैठकर उचित बातचीत करें, उन्हें यह एहसास दिलाएं कि आप अनंत काल तक उनके साथ हैं।

कुंभ: यदि आप भीतर से रचनात्मक हैं, तो यही वह समय है जब आपको अपनी रचनात्मकता को बाहर आने देना चाहिए। क्यों? क्योंकि इस पूरे सप्ताह आपके रचनात्मक गुणों और कौशल को आपके वरिष्ठ और सहकर्मी सराहेंगे। यह विभिन्न अवसरों के द्वार खोलेगा जो कार्यस्थल पर आपकी वर्तमान स्थिति को बढ़ा सकते हैं।

मीन: काम के दबाव और आसपास के बदलाव के कारण आप इस पूरे सप्ताह खुद को तनाव में महसूस कर सकते हैं। आप शायद ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो परिवर्तनों के लिए आसानी से खुले हैं। हालांकि, आपको आशाजनक रूप से वापसी करने के लिए ऐसी स्थिति से निपटना होगा। अविवाहित लोगों को आखिरकार इस सप्ताह कोई आकर्षक और प्यार करने वाला मिल सकता है।

गोवा के दर्शनीय स्थल

गोवा का नाम सुनते ही सबसे पहले मन में सिर्फ और सिर्फ मौज मस्ती दिखाई देती है। कुछ लोग गोवा जाने से पहले ये सोचते है। की हम गोवा परिवार के साथ जा सकते हैं , या नही तो में आपको बताना चाहूँगा की आप बिल्कुल अपने परिवार के साथ गोवा ट्रिप प्लान कर सकते हैं।

गोवा समंदर मे मौज मस्ती और खूबसूरत नजारे का आनंद लेने के लिए भारत की सबसे खूबसूरत जगहों मे से एक है। गोवा अपने खूबसूरत बीचों और अपने पर्यटन स्थलों और सबसे ज्यादा फेमस नाइट लाइफ के लिए जाना जाता है। अगर आपको भी बीचों की सैर और नाइट लाइफ का आनंद लेना अच्छा लगता है तो गोवा आपके के लिए सवसे अच्छी जगह साबित होने वाली है।

● संकलन : स्वाति चतुर्वेदी

अगुआड़ा किला

अगुआड़ा किला उत्तरी गोवा का दूसरा खूबसूरत पर्यटन स्थल है। इस किले का निर्माण पुरीगालियों ने मराठों के खिलाफ सुरक्षा के लिए करवाया गया था। यहाँ से आपको नदी और समुद्र का खूबसूरत नजारा देखने को मिलेगा। और इस किले मे अभी भी बहुत सी इमारते है वो भी अच्छी स्थिति मे।

बागा बीच

गोवा के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों मे से एक बागा बीच है। इस बीच के किनारे आपको दुकाने, नाइट क्लब, पब और वॉटर स्पोर्ट एक्विटी मिलेगी। जो बागा बीच को और भी खूबसूरत बनाती है। यहाँ आप के तरह की वोटिंग भी कर सकते हैं। जिनमे केले की सवारी, स्पीड वोटिंग, पैडल वोटिंग और सर्फ वोटिंग भी कर सकते हैं।

केलंगुट बीच

गोवा को बीचों के लिए ही जाना जाता है। लेकिन केलंगुट बीच को तो समुद्र तट की रानी कहा जाता है। गोवा के बीचों मे सबसे बड़ा बीच है ये। इस बीच पर आपको वॉटर एक्विटी करने को मिल जायेगी। अगर आप 2 दिनों की गोवा ट्रिप पर आये हैं तो यहाँ जा सकते हैं। इस बीच के पास मे ही केंडोलिम बीच भी है आप वहाँ भी जा सकतें हैं।

आगोंडा बीच

आगोंडा बीच को गोवा के हनिमॅन स्पॉट के लिए जाना जाता है। ज्यादातर कपल्स का ये बीच अक्रशं का केंद्र रहता है। गोवा के खूबसूरत पर्यटन स्थलों मे से एक है। यहाँ भी आपको एक बार जरूर घूमने जाना चाहिए।

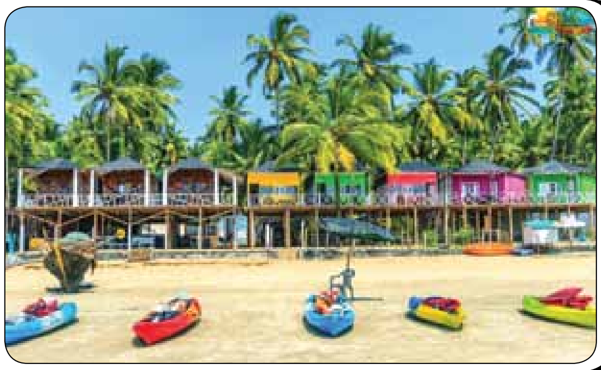

बोम जिसस बेसिलिका चर्च

बोम जिसस बेसिलिका चर्च गोवा के सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थलों मे से एक है। चर्च का निर्माण 1605 मे हुआ था। ये चर्च सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों मे से एक है। इस जगह को भी आप अपना गोवा के दर्शनीय स्थलों की सूची मे जरूर रखियेगा ।

टिटो क्लब

टिटो क्लब एक नाइट क्लब है। अगर आप अपनी गोवा नाइट को खूबसूरत बनाना चाहते हो। तो ये जगह आपके बहुत हो अच्छी साबित होने वाली है। ये क्लब नाइटलाइफ के लिए ही जाना जाता है। अगर आप भी गोवा की नाइट लाइफ का आनंद लेना चाहते हैं। तो आपको यहाँ जरूर जाना चाहिए।

पंजिम

गोवा मे अगर बात बीचों और नाइट क्लबों की होगी तो कसीनो की कैसे नही होगी। कैसिनो इंडस्ट्रीज बहुत बड़ी संख्या मे है। फिर चाहे बात गोवा की जमीन की हो या फिर या या यहाँ के किसी भी आईलैंड की हो। यहाँ आपको इस तरह की कोई कमी नही होने वाली है।

गोवा जाने का सबसे अच्छा समय कौन सा है

गोवा घूमने के लिए सबसे अच्छा समय सर्दियों का होता है। गोवा आपको नबम्वर से फरवरी के बीच जाना चाहिए। इसी समय ज्यादतर पर्यटकों गोवा घूमने आते हैं। मानसून के समय आपको यहाँ कई बड़ी पार्टियाँ देखने को मिलेगी। गोवा के वॉटर एक्विटी करने के लिए सबसे अच्छा मौसम होता है।

कैसे पहुंचे गोवा

हवाईजहाज द्वारा

अगर आप हवाई यात्रा करके यहाँ तक पहुँचना चाहते हैं तो, डबोलिम एयरपोर्ट इसके सबसे नजदीकी है। यह गोवा की राजधानी, पण्जी से 29 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय फ्लाईटें आती है। ये एयरपोर्ट यू.के व जर्मनी को गोवा से जोड़ता है।

ट्रेन द्वारा

मरगाँव में स्थित, मड़गाँव व वास्को-डी-गामा, गोवा के मुख्य रेलवे स्टेशन है जिसका अन्य शहरों से अच्छा जुड़ाव बना हुआ है। भारत के अधिकतर राज्यों से यहाँ आया जा सकता है।

बढ़ रही फेफड़ों की बीमारी, जाने इससे जुड़े लक्षणों के बारे में

व्यस्त जीवनशैली और खानपान के कारण फेफड़े के रोगियों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। हर साल लाखों लोग फेफड़े सम्बन्धित बीमारी से पीड़ित हो रहे हैं लेकिन केवल ये दो कारण ही इस बीमारी के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। इस बीमारी के बारे में सबसे खास बात यह है कि कई मरीजों को इस बीमारी के बारे में शुरूआत में पता भी नहीं चल पाता है। लोग सामान्यतया खांसी, सीने में दर्द, कफ, बलगम आदि को सामान्य बीमारी की तरह लेते हैं। कई बार तो यही टीबी और फेफड़ों के कैंसर का कारण भी बनता है। इससे जुड़े लक्षणों के बारे में हम आपको बता रहे हैं।

लगातार खांसी

फेफड़ों की समस्या होने पर लगातार खांसी आती है। खांसी एक प्रतिरक्षा प्रणाली है जो म्यूकस, यानी जहरीले पदार्थों और बाहरी तत्वों से श्वसन यानी रेस्पिरेटरी नली को साफ करती है लेकिन यदि खांसी अधिक आये तो यह फेफड़ों की बीमारी के संकेत हैं। लगातार खांसी आने की वजह से बुखार, डिस्पिनिया, म्यूकस में खून आदि की समस्या हो सकती है।

सांस लेने में खरखराहट

फेफड़े सांस लेने में मदद करते हैं। यदि सांस लेने के दौरान खरखराहट या जोर-जोर से आवाज आने लगे तो यह फेफड़ों की बीमारी के संकेत हैं। जब श्वसन मार्ग संकुचित होता है, ऊतकों में सूजन या अत्यधिक स्राव या म्यूकस आदि के कारण सांस लेने में समस्या आती है तब यह स्थिति होती है। इसे वीजिंग भी कहते हैं जो फेफड़ों की बुरी स्थिति की ओर संकेत करता है।

खांसी के साथ खून आना

फेफड़ों की बीमारी होने पर खांसी के साथ खून भी आ सकता है। खून के थक्के, म्यूकस के साथ खून, या फिर सिर्फ खून आ सकता है। यह अत्यधिक खांसी के कारण हो सकता है जो फेफड़ों की गंभीर बीमारी की ओर संकेत कर सकता है। इसे हीमोपटाइसिस कहते हैं जो कि फेफड़े की गंभीर बीमारी के प्रमुख लक्षणों में से एक है।

सांस लेने में समस्या

सांस लेने में समस्या को रेस्पिरेटरी फेल्योर भी कहते हैं, यह फेफड़ों की गंभीर बीमारी का एक महत्वपूर्ण संकेत है। एक्यूट रेस्पिरेटरी फेलियोर अत्यधिक संक्रमण, फेफड़ों की सूजन, धड़कन के ठहरने या फेफड़े की गंभीर बीमारी के कारण हो सकता है। फेफड़े जब खून को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं पहुंचा पाते और कार्बन डाइऑक्साइड को सामान्य तौर पर हटा नहीं पाते तो गंभीर समस्या होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सांस लेने में समस्या होती है।

छाती में दर्द

फेफड़ों की बीमारी होने पर सामान्यतः छाती में दर्द होना होता है। यह छाती की मांसपेशियों और हड्डियों में किसी समस्या की ओर संकेत करता है। यह समस्या छोटी और गंभरी भी हो सकती है। कुछ मामलों में इसके कारण आदमी की जान भी जा सकती है। यदि छाती में दर्द के साथ खांसी और बुखार भी हो, तो यह संक्रमण की ओर संकेत करता है।

त्वचा का बदलना

इसका असर पुरुषों की त्वचा पर भी पड़ता है, इसकी वजह से व्यक्ति की त्वचा नीली या बैंगनी रंग की हो जाती है। इस स्थिति को साइनोसिस कहते हैं। यह स्पष्टतौर पर होठों और नाखून के इर्द-गिर्द दिखाई पड़ता है। यह स्थिति तब आती है जब खून को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाता है। साइनोसिस अचानक से दिखाई दे सकता है जो तेज गति या धीमी गति से फेफड़े की गंभीर बीमारी की ओर संकेत करता है।

सूजन की समस्या

फेफड़ों की बीमारी के कारण हाथों, पैरों और एड़ी में सूजन हो सकती है हालांकि सामान्यतया सूजन दिल की बीमारी के कारण होती है। इसके साथ छोटी सांस भी आती है। अक्सर दिल और फेफड़े दोनों समस्याओं के लक्षण एक जैसे होते हैं क्योंकि ये दोनों बीमारियां एक-दूसरे अंगों को प्रभावित करती हैं। फेफड़े की बीमारी केवल बूढ़े लोगों को ही नहीं प्रभावित करती है, वास्तव में फेफड़े की बीमारी और फेफड़े के संक्रमण नवजात बच्चे से लेकर हर उम्र तक के व्यकित को हो सकती है। नवजातों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण फेफड़ों की बीमारियां हैं।

सीरम इंस्टिट्यूट मंकीपॉक्स वैक्सीन बनाएगा

कोरोना वैक्सीन कोविशील्ड बनाने वाली कंपनी सीरम इंस्टिट्यूट ने मंकीपॉक्स वैक्सीन बनाने का ऐलान किया है। कंपनी के सीईओ अदार पूनावाला ने बताया कि मंकीपॉक्स के ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी घोषित होने के बाद लाखों लोगों की मदद करने के लिए हम एक वैक्सीन विकसित कर रहे हैं। उम्मीद है कि एक साल के अंदर हम इसे बना लेंगे।

केंद्र सरकार ने 19 अगस्त को मंकीपॉक्स के बढ़ते मामलों के बीच देश के सभी पोर्ट और एयरपोर्ट के साथ पाकिस्तान और बांग्लादेश बॉर्डर पर अलर्ट जारी किया था। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने अधिकारियों को बाहर से आने वाले यात्रियों में मंकीपॉक्स के लक्षणों को लेकर सतर्क रहने के लिए कहा है। फिलहाल भारत में अभी मंकीपॉक्स से कोई संक्रमित नहीं है। आखिरी मामला मार्च 2024 में सामने आया था।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने 19 अगस्त को दिल्ली में केंद्र के तीन बड़े अस्पतालों- राम मनोहर लोहिया, सफदरजंग और लेडी हार्डिंग में नोडल सेंटर्स बनाए हैं। इन अस्पतालों में मंकीपॉक्स के मरीजों के इलाज और देखभाल के लिए आइसोलेशन वार्ड बनाए गए हैं। केंद्र ने सभी राज्य सरकारों को उनके राज्य के अस्पतालों में मंकीपॉक्स के मरीजों के लिए जरूरी व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए। अधिकारियों ने बताया कि अभी तक के आकलन के मुताबिक, मंकीपॉक्स के बड़े पैमाने पर फैलने का खतरा कम है।

क्या आप इन चीजों को खाली पेट खाते हैं बढ़ सकती है परेशानी

हम जो कुछ खाते है उसका सीधा संबंध हमारी सेहत से है। भोजन से ही हम जिंदा रहते हैं। लेकिन सेहत के लिए सही भोजन करना जरूरी है। इसके अलावा कुछ फूड ऐसे होते हैं जिनका सही समय पर सेवन नहीं किया गया तो फायदे की जगह नुकसान हो सकता है। कई ऐसे फूड हैं जिनका सेवन अगर आप सुबह में करते हैं तो यह फायदे की जगह नुकसान पहुंचा सकता है। दरअसल, जब हम खाली पेट रहते हैं तो हमारी आंत में असंख्य बैक्टीरिया इस तरह के रसायन बनाते हैं जिससे खाली पेट में एसिड सक्रिय नहीं हो पाता है। लेकिन कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो इन बैक्टीरिया को मार देती हैं। इसलिए खाली पेट हमें क्या नहीं खाना चाहिए इसकी जानकारी जरूरी है। तो आइए जानते हैं कि किन-किन चीजों को खाली पेट नहीं खाना चाहिए।

छाछ

कई लोग खाली पेट छाछ पीने को सही मानते हैं लेकिन यह आपको नुकसान दे सकता है। छाछ में लैक्टिक एसिड होता है। लेक्टिक

एसिड पेट में जाकर कई गुड बैक्टीरिया को मार देता है। ये बैक्टीरिया पेट में एसिडिटी को बनने से रोकते हैं। इसलिए खाली पेट अगर छाछ पीते हैं तो इससे एसिडिटी बढ़ जाएगी।

चीनी

आमतौर पर लोग खाली पेट शर्बत पीने को भी सही मानते हैं। लेकिन आपको याद रखना चाहिए कि शुगर को पचाने के लिए सुबह-सुबह इतना इंसुलिन नहीं बनता जिसके कारण खून में शुगर की मात्रा बढ़ सकती है। इसलिए सुबह—सुबह खाली पेट शुगर का सेवन नहीं करना चाहिए।

कार्बोनेटेड ड्रिंक

आपको यह जानना चाहिए कि सॉफ्ट ड्रिंक का सेवन हमेशा करना सही नहीं है। सुबह में खाली पेट सॉफ्ट ड्रिंक या सोडा वाटर का सेवन सेहत के लिए नुकसानदेह है। इससे पेट में एसिडिटी हो सकती है। इसके अलावा अगर आप खाली पेट सॉफ्ट ड्रिंक पीते हैं तो पेट फुलने की समस्या भी हो सकती है. इसके अलावा एसोफेगर कैंसर का जोखिम भी बढ़ सकता है।

साइट्रस फ्रूट

सुबह-सुबह खाली पेट संतरे, नींबू का भी सेवन नहीं करना चाहिए। यह भी काबोर्नेटेड पदार्थ की तरह ही असर करता है. ये चीजें गैस को बढ़ाने वाला रसायन पैदा करती है. इससे एसिडिटी बढ़ती है। हालांकि इनमें मौजूद कई सारे एंटीऑक्सीडेंट्स हमें कई तरह से फायदे पहुंचाते हैं।

गरम मसाला

खाली पेट या सुबह-सुबह बहुत अधिक तेज गरम मसाले वाली चीजों को खाने से पेट दर्द की समस्या हो सकती है। इससे सीने में जलन भी हो सकती है। खाली पेट गरम मसाला का सेवन गैस को बढ़ाता है जिससे पेट में दर्द भी हो सकता है।

सतपाल सर-सुशील कुमार-रवि दहिया-अमन सहरावत 'मेरे लिए प्रेरणा के स्रोत' हैंः रौनक दहिया

युवा पहलवान रौनक दहिया जॉर्डन के अम्मान में अंडर-17 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में ग्रीको-रोमन 110 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक हासिल करने के बाद प्रसिद्ध छत्रसाल अखाड़े में लौट आए।

वरिष्ठ पहलवानों की एक लंबी कतार से प्रशिक्षित और प्रेरित, रौनक ने बात की और बताया कि कैसे 'महाबली' सतपाल सिंह, सुशील कुमार, रवि दहिया और अब अमन सहरावत जैसे महान खिलाड़ियों से घिरे रहने ने उन्हें इस दिशा में कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है।

रौनक ने कहा, "सतपाल सर, सुशील, रवि, अमन मेरी प्रेरणा के स्रोत हैं और अगर भगवान ने इजाजत दी तो मुझे भी पदक मिलेगा और उम्मीद है कि मैं अपने छोटे भाइयों के लिए प्रेरणा बन सकता हूं और यही उन्हें आगे बढ़ाएगा।"

छत्रसाल अखाड़े की ओलंपिक पदक विजेता पहलवानों को प्रशिक्षित करने में प्रसिद्ध कुश्ती कोच सतपाल सिंह के संरक्षण में एक शानदार प्रतिष्ठा है।

अखाड़े के एथलीटों ने कुल छह पदक जीते हैं, जिसमें सुशील कुमार ने दो बार सम्मान जीता है और अमन, रवि दहिया, बजरंग पुनिया और योगेश्वर दत्त सभी ने एक-एक पदक जीता है।

रौनक ने अपने कांस्य पदक जीतने के अभियान की शुरूआत अर्तुर मनवेलियन पर 8-1 की जीत के साथ की और उसके बाद डेनियल मसलाकोव पर शानदार तकनीकी श्रेष्ठता वाली जीत हासिल की।

हालांकि अपनी उम्र और वजन वर्ग में दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी रौनक अपने सेमीफाइनल मुकाबले में हंगरी के जोल्टन कजाको से 0-2 से हार गए, लेकिन कांस्य पदक मैच में उन्होंने तुर्किये के इमुरुल्ला कैपकन को 6-1 से हरा दिया।

उन्होंने कहा, मैं सात-आठ साल से कुश्ती खेल रहा हूं। सुशील कुमार ने 2008 और 2012 में पदक जीते और मेरे अंदर दीवानगी काफी बढ़ गई क्योंकि मुझे देखने को मिला कि जब आप ओलंपिक में पदक जीतते हैं तो लोगों का कितना प्यार और सम्मान मिलता है।

मैं 2021 में रवि दहिया को लेने के लिए हवाई अड्डे पर गया था जब वह पदक जीतकर लौटे थे और इसने मुझे इस उपलब्धि को दोहराने के लिए उत्साहित कर दिया।

अब, मेरा भाई अमन, जो मेरे साथ अभ्यास करता है, कुश्ती में एक बड़ा नाम बन गया है, इसलिए इससे मुझे बहुत खुशी और प्रेरणा मिलती है।

|| पुलकित चतुर्वेदी ||

टीम इंडिया के ओपनर रहे शिखर धवन ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर वीडियो पोस्ट कर इसकी जानकारी दी।

वीडियो पोस्ट करते हुए धवन ने लिखा, "मैं अपने 14 साल के अंतर्राष्ट्रीय करियर को बहुत सारी यादों के साथ समाप्त करता हूं। आप सभी को प्यार और समर्थन के लिए शुक्रिया। जय हिंद।"

वीडियो में उन्होंने कहा, "जिंदगी में आगे बढ़ने का समय आ गया है, इसलिए मैं अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट से संन्यास ले रहा हूं। मैं भारत के लिए अब नहीं खेल पाऊंगा, यह सोचकर दुखी होने की बजाय मैं यह सोचकर खुश हूं कि मैं भारत के लिए इतने लंबे समय तक खेला। मैं अपनी इस यात्रा के लिए अपने परिवार, बचपन के कोचों, साथ खेले खिलाड़ियों और सभी फैंस का शुक्रगुजार हूं।"

धवन ने भारत के लिए 269 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले, जिसमें उनके नाम 24 शतक हैं। वह इस साल आईपीएल 2024 के दौरान पंजाब किंग्स की कप्तानी करते हुए दिखे थे।

उन्होंने भारत के लिए आखिरी बार दिसंबर 2022 में खेला था। साल 2010 में टीम इंडिया के साथ जुड़े शिखर ने अब तक खेले 34 टेस्ट में 40.61 की औसत से 2,315 रन बनाए। जबकि 167 वनडे मैचों में उन्होंने 44.11 की औसत से 7,436 रन बनाए। वहीं, 68 टी-20 मैचों में उन्होंने 27.92 की औसत से 1,759 रन बनाए हैं।

ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स को 7 विकेट से हराया

सुजल सिंह (63) के शानदार अर्धशतक से ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने अरुण जेटली स्टेडियम में चल रही दिल्ली प्रीमियर लीग टी20 में साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स पर सात विकेट से जीत दर्ज की।

192 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए, ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने शानदार शुरूआत की और दोनों सलामी बल्लेबाजों अनुज रावत और सुजल सिंह ने विपक्षी गेंदबाजों का डटकर सामना किया।

दोनों सलामी बल्लेबाजों द्वारा आसानी से बाउंड्री लगाने के साथ, ईस्ट दिल्ली राइडर्स पावरप्ले के अंत में 86/0 तक पहुंच गया। रावत की शानदार पारी का अंत हो गया क्योंकि उन्हें 34 रन पर आयुष बदोनी ने आउट किया। दूसरे छोर पर सुजल ने स्कोरबोर्ड को चालू रखा। आयुष के विकेट लेने से पहले कप्तान हिम्मत सिंह (29) ने उनका साथ दिया। सुजल ने सिर्फ 19 गेंदों पर 50 रन बनाए।

दिग्वेश त्रिपाठी के विकेट लेने के साथ ही उनकी पारी समाप्त हो गई। उनकी पारी में सात चौके और तीन छक्के शामिल थे।

इसके बाद हार्दिक शर्मा और समर्थ सेठ ने लक्ष्य का पीछा करने की जिम्मेदारी ली। दोनों के बीच 34 गेंदों पर 50 रन की साझेदारी हुई। हार्दिक ने 24 गेंदों में 38 रनों का योगदान दिया, जबकि समर्थ ने 20 गेंदों में 24 रन बनाए। ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने सात विकेट और 13 गेंद शेष रहते लक्ष्य का सफलतापूर्वक पीछा किया।

इससे पहले पारी में ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स के लिए प्रियांश आर्य और सार्थक रे ने पारी की शुरूआत की। ईस्ट दिल्ली राइडर्स को वह शुरूआत मिली जो वे चाहते थे क्योंकि सिमरजीत सिंह ने सार्थक को दो रन पर आउट कर दिया। क्रीज पर आने वाले थे कप्तान आयुष बदोनी। उन्होंने प्रियांश के साथ मिलकर 36 गेंदों पर 67 रन की साझेदारी की।

बदोनी की 20 गेंदों में 32 रनों की तेज पारी, जिसमें दो चौके और तीन छक्के शामिल थे, ने पावरप्ले के अंत में साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स को 60/1 तक पहुंचने में मदद की। आयुष को प्रियांश आर्य का अच्छा साथ मिला जिन्होंने कुछ बेहतरीन शॉट्स से स्कोरबोर्ड को चालू रखा।

ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने खेल में वापसी की क्योंकि मयंक रावत ने आयुष को 32 रन पर आउट कर दिया क्योंकि प्रणव पंत ने सीमा पर एक अच्छा कैच लिया। आधे चरण तक साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स का स्कोर 88/2 था। शानदार फॉर्म में चल रहे प्रियांश , वह 30 गेंदों में 50 रन तक पहुंच गए, उनकी पारी में पांच चौके और तीन छक्के शामिल थे, हालांकि इसके तुरंत बाद रावत ने उन्हें पवेलियन वापस भेज दिया।

ईस्ट दिल्ली राइडर्स ने खेल में वापसी की और जल्द ही चार विकेट लेकर साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स को बैकफुट पर धकेल दिया। 108/3 से, साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स को स्कोरबोर्ड को टिके रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा। पारी के अंत में ध्रुव सिंह और सुमित माथुर ने बहुमूल्य रनों का योगदान देकर निर्धारित 20 ओवरों में स्कोर 191/7 तक पहुंचाया।

ईस्ट दिल्ली राइडर्स के लिए, मयंक रावत और हर्ष त्यागी सबसे अच्छे गेंदबाज रहे, दोनों ने दो-दो विकेट लिए, जबकि सिमरजीत सिंह और हिमांशु चौहान ने एक-एक विकेट लिया।

संक्षिप्त स्कोरः साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स 20 ओवर में 191/7 (प्रियांश आर्य 53, ध्रुव सिंह 50; मयंक रावत 2/33, हर्ष त्यागी 2/17) ईस्ट दिल्ली राइडर्स 17.5 ओवर में 193/3 (सुजल सिंह 63, हिम्मत सिंह 29; आयुष बदोनी 2/23) ।

भारतीय हॉकी के 'हिडन हीरो' हैं नवीन पटनायक

भारतीय हॉकी टीम के उदय में नवीन पटनायक एक अहम किरदार हैं। ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री के हॉकी से लगाव के कई किस्से हैं। पेरिस ओलंपिक में ब्रॉन्ज मेडल के साथ लौटी हॉकी टीम के कई खिलाड़ियों ने उनसे मुलाकात की और मुश्किल दिनों में हॉकी को सपोर्ट करने के लिए उनका आभार जताया।

पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत ने ब्रॉन्ज मेडल जीता था। टीम ने ब्रॉन्ज मेडल मैच में स्पेन को 2-1 से हराकर लगातार दूसरी बार पोडियम स्थान हासिल किया था। इस जीत के बाद हॉकी टीम स्वदेश लौट चुकी है। इस बीच भारतीय हॉकी टीम के कुछ खिलाड़ियों ने नवीन पटनायक से मुलाकात की। इससे पहले हॉकी टीम का भुवनेश्वर में भव्य स्वागत किया गया था।

ओलंपिक पदक विजेता भारतीय हॉकी टीम ने नवीन निवास पर नवीन पटनायक से मुलाकात की। इस दौरान पूर्व सीएम ने खिलाड़ियों का सम्मान किया और उन्होंने टीम से अगली बार गोल्ड की उम्मीद लगाई।

भारतीय हॉकी टीम के खिलाड़ियों ने कहा, "नवीन पटनायक सर ने जो हॉकी इंडिया के लिए किया है, वो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उन्होंने तब हमारा साथ दिया जब हमारे लिए कोई खड़ा नहीं हुआ। ओडिशा को स्पोर्ट्स कैपिटल बनाने में उनका बड़ा योगदान है।"

पूर्व सीएम ने खिलाड़ियों से कहा, "पूरी टीम ने शानदार प्रदर्शन किया है। आप सबको बधाई। अगली बार आप जरूर गोल्ड जीतेंगे।"

नीरज चोपड़ा सीजन के सर्वश्रेष्ठ 89.49 मीटर थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर-फाइनल के लिए क्वालीफाई किया

पेरिस ओलंपिक के रजत पदक विजेता नीरज चोपड़ा लुसाने डायमंड लीग में अपने छठे और अंतिम थ्रो में 89.49 मीटर की दूरी तय करके दूसरे स्थान पर रहे। ग्रेनाडा के एंडरसन पीटर्स ने अपने 90.61 मीटर के अंतिम थ्रो के साथ और जर्मनी के जूलियन वेबर ने 88.37 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ क्रमशः पहला और तीसरा स्थान हासिल किया।

यह चोपड़ा का इस सीजन का सर्वश्रेष्ठ और अब तक का दूसरा सर्वश्रेष्ठ थ्रो था। पेरिस में उन्होंने 89.45 मीटर की दूरी तय की।

चोपड़ा थ्रो के चौथे राउंड के अंत तक चौथे स्थान पर थे, और वह अपने पांचवें थ्रो में 85.58 मीटर की थ्रो के साथ शीर्ष तीन में पहुंच गए और अगले महीने ब्रुसेल्स में होने वाले डायमंड लीग 2024 के फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया।

चौथा स्थान यूक्रेन के अर्तुर फेलनर ने हासिल किया, जिनका सर्वश्रेष्ठ थ्रो 83.38 मीटर था। इससे पहले पेरिस ओलंपिक में, हालांकि चोपड़ा स्वर्ण नहीं जीत सके, फिर भी उन्होंने भारत के लिए इतिहास रचा, पहलवान सुशील कुमार के बाद ओलंपिक में लगातार पदक जीतने वाले दूसरे पुरुष और कुल मिलाकर तीसरे खिलाड़ी बने, सुशील ने 2008 और 2012 के ओलंपिक खेल कांस्य और रजत पदक जीता। पी.वी. सिंधु लगातार ओलंपिक में पदक जीतने वाली अन्य भारतीय हैं, 2016 में रियो में रजत और टोक्यो 2020 में कांस्य पदक।

पेरिस में, चोपड़ा ने 89.45 मीटर तक भाला फेंका, जो 87.58 मीटर में स्पष्ट सुधार था जिसने उन्हें टोक्यो में स्वर्ण पदक दिलाया, लेकिन यह मौजूदा विश्व चैंपियन और डायमंड लीग फाइनल विजेता पाकिस्तान के अरशद नदीम के लिए पर्याप्त साबित नहीं हुआ, जो उनके अच्छे दोस्त हैं। नदीम ने 92.97 मीटर के विशाल थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीतने का ओलंपिक रिकॉर्ड बनाकर उन्हें पीछे छोड़ दिया।

वाणी कपूर ने 11 साल में की 8 फिल्में- करोड़ों में है नेटवर्थ

बॉलीवुड एक्ट्रेस वाणी कपूर अपना 36वां जन्मदिन मना रही हैं। एक्ट्रेस अक्सर एक्ट्रेस ने अपने 11 साल के एक्टिंग करियर में 8 फिल्मों में काम किया। लेकिन उनकी फिल्में कुछ खास प्रदर्शन नहीं दिखा पाई. वहीं एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं और अपनी ग्लैमरस फोटोज शेयर करती रहती हैं। एक फिल्म में हीरो को 24 बार किस करने के चलते एक्ट्रेस ने काफी सुर्खियां बटोरी थी। बता दें वाणी ने भले ही बॉलीवुड की कम फिल्मों में काम किया लेकिन अब वो करोड़ों की संपत्ति की मालकिन हैं। वाणी कपूर अपने टैलेंट, मेहनत और लगन के दम पर करोड़ों की संपत्ति की मालिक है। एक्ट्रेस अपनी एक फिल्म के लिए लगभग 1 करोड़ रुपए चार्ज करती हैं। वाणी फिल्मों के साथ-साथ मॉडलिंग, फोटोशूट, ब्रांड कोलैबोरेशन, एड से भी कमाई करती हैं। मीडिया रिपोर्ट की मानें तो एक्ट्रेस की नेटवर्थ 18 करोड़ रुपए है। वाणी कपूर दिल्ली की रहने वाली हैं और उन्होंने यहां एक आलीशान घर भी खरीदा है। इसके अलावा एक्ट्रेस के पास मुंबई में भी एक घर है। एक्ट्रेस को लग्जरी कार का भी काफी शौक हैं और उनके पास ऑडी जैसी कार मौजूद है।

जेनिफर लोपेज की 'एनाकोंडा' रीबूट पर चर्चा

1997 की कल्ट क्लासिक 'एनाकोंडा' वापसी के लिए तैयार है, इस बार कॉमिक अंदाज के साथ। सूत्रों ने पीपल पत्रिका को पुष्टि की है कि अभिनेता जैक ब्लैक और पॉल रुड प्रतिष्ठित हॉरर फिल्म के रीबूट में अभिनय करने के लिए प्रारंभिक चर्चा कर रहे हैं, हालांकि अभी तक कोई डील फाइनल नहीं हुई है। आगामी फिल्म जेनिफर लोपेज और आइस क्यूब अभिनीत मूल फिल्म की सीधी रीमेक नहीं होगी, बल्कि इसमें हास्य तत्वों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। पीपुल पत्रिका के अनुसार, टॉम गोर्मिकन और केविन एटन स्क्रिप्ट को सह-लिख रहे हैं, गोर्मिकन निर्देशन भी करेंगे। सोनी की सहायक कंपनी कोलंबिया पिक्चर्स नए प्रोजेक्ट के वितरण का काम संभालेगी।

हॉलीवुड रिपोर्टर के अनुसार, रीबूट का उद्देश्य 'द मेग' जैसी हाल की सफल फिल्मों में देखी गई हास्य भावना को पकड़ना है, जिसने दुनिया भर में 530 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक की कमाई की। 'एनाकोंडा' के नए संस्करण में क्लासिक सांप-थीम वाली हॉरर के साथ हास्य का मिश्रण होने की उम्मीद है। अप्रैल 1997 में रिलीज हुई मूल 'एनाकोंडा' में लोपेज ने 'सेलेना' में अपने सफल प्रदर्शन के तुरंत बाद एक बेहतरीन भूमिका निभाई थी। मिश्रित समीक्षाओं और कई रेजी पुरस्कार नामांकनों के बावजूद, यह फिल्म बॉक्स-ऑफिस पर हिट रही, जिसने 136.8 मिलियन अमरीकी डॉलर कमाए और पिछले 27 वर्षों में पंथ का दर्जा हासिल किया।

पीपुल पत्रिका के अनुसार, इसने 'एनाकोंडाः द हंट फॉर द ब्लड ऑर्किड' (2004), 'एनाकोंडा 3: ऑफस्प्रिंग' (2008), 'एनाकोंडाः ट्रेल ऑफ ब्लड' (2009) और 'लेक प्लासिड बनाम एनाकोंडा' (2015) सहित कई सीक्वल भी बनाए।

जैक ब्लैक की भागीदारी पिछले महीने टेनेशियस डी के दौरे को रद्द करने की घोषणा के बाद से उनकी पहली प्रमुख फिल्म परियोजना होगी। पीपुल पत्रिका के अनुसार, हाल ही में हुई गोलीबारी की घटना के बारे में उनके बैंडमेट काइल गैस द्वारा किए गए एक विवादास्पद मजाक के बाद यह रद्दीकरण किया गया।

ऊर्फी जावेद को लुक दिखाने के लिए सजाए गए मंच की जरूरत नहीं

शून्य से साम्राज्य खड़ा करने के लिए क्या करना पड़ता है? अगर आप ऊर्फी जावेद हैं, तो इसकी कुंजी खुद पर अटूट विश्वास है। विचार यह है कि आप जो कर रहे हैं उस पर सवाल उठाए बिना हर दिन उठें और बस उसे समान निरंतरता के साथ करें। उनसे बदनाम होने के अपने रहस्यों को साझा करने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा कि उनका फॉमूर्ला सभी के लिए देखने और विश्लेषण करने के लिए उपलब्ध है। उन्होंने एक चुनौती भी दीः "मैंने जो किया है उसे करने के लिए एक्स-फैक्टर की जरूरत होती है। मुझे बहुत खुशी

होगी अगर कोई भी मेरे जैसा करने की कोशिश करे और सफल हो जाए।" हम उन्हें सोशल मीडिया सनसनी के रूप में जानते हैं। लेकिन, किसी और से अलग। इसकी वजह यह है कि वह मेकअप, डांस और रील बनाने या स्वस्थ या सुंदर रहने के टिप्स देने वाली कोई आम इन्फ्लुएंसर नहीं हैं। उन्होंने बस अपनी पसंद के कपड़े पहनने में ही अपना लक्ष्य पाया। उसने कचरे से कपड़े बनाए, कचरे के थैलों, रस्सियों, पट्टियों से लेकर चिप्स, पिज्जा स्लाइस, च्युइंग गम और कांच के पैकेट तक।

उसे इन लुक को दिखाने के लिए कभी किसी सजाए गए मंच की जरूरत नहीं पड़ी। दुनिया ही उसका रनवे थी। वह बस मुंबई की गलियों में चली जाती थी, हर नुक्कड़ और कोने को कवर करती थी, और फोटोग्राफर उसे क्लिक करने के लिए लाइन में खड़े रहते थे। कुछ लोगों ने उसे विचित्र कहा, तो कुछ ने रचनात्मक। लेकिन, हर किसी ने उसकी बहादुरी को स्वीकार किया। ऐसा हमेशा लगता था जैसे वह चाहती थी कि दुनिया उसे उसके साहसी व्यक्तित्व के लिए पुकारे। उर्फी का लक्ष्य स्पष्ट था - "बहुत बहुत प्रसिद्ध" होना।

● डॉ. अशोक चतुर्वेदी, दुबई

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **विजयशंकर चतुर्वेदी** द्वारा ए.जी.एस. पब्लिकेशन एफ-23 सेक्टर-6 नोएडा (यू.पी.) से मुद्रित एवं एच-42, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092 से प्रकाशित
संपादक : **विजयशंकर चतुर्वेदी**, दूरभाष नं. 011-49038655, 011-49073192 मो. 9811063789, 9211152380 (डीएवीपी एवं दिल्ली सरकार से विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त)
प्रकाशन: प्रत्येक सप्ताह रविवार **पोस्टिंग:** प्रत्येक सप्ताह मंगलवार एवं बुधवार E-mail: rashtratimesnewspaper@gmail.com, www.rashtratimes.com rashtratimes